हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जून, 2008 वर्ष 7 अंक 04

— सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

तैबा का मक़ाम

शफ़्क़त से महब्बत से मुझे समझा कर
इक रोज़ कहा दिल ने अकेला पा कर
मेरी तो समझ ही में नहीं आता है
तैबा से भी लौट आते हैं कैसे जाकर

रईसुश्शाकिरी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

- दुन्या क्या है — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मंज़ूर नोमानी 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — अमतुल्लाह तस्नीम 7
- हम कैसे पढ़ाएं — डा० सलामतुल्लाह 10
- कारवाने ज़िन्दगी — स०अ० हसन अली हसनी नदवी 12
- टूटे हुए दिल की बड़ी क़ीमत है — स०अ० हसन अली हसनी नदवी 15
- बीमार के हुकूक़ — मौ० स० सुलैमान नदवी 16
- कन्या (पद्य) — 17
- कम ही देखे (पद्य) — दरवेश अख्तर 17
- इमामे आज़म (रह०) — नजमुस्साक़िब 18
- आपके प्रश्नों के उत्तर — इदारा 20
- कादियानीयत से होश्यार — मौ० स० बिलाल हसनी 22
- भारत का संक्षिप्त इतिहास — स० अबूज़फ़र नदवी 23
- प्राचीन भारत की तस्वीर बाबर के क़लम से — मौ० स० अ० अली 25
- मौजूदा समाज और औरतों की आज़ादी — अबुल ख़ैर ज़फ़र 26
- गर्मी से कैसे बचें — इदारा 28
- उर्दू शब्दों का उच्चारण और उनका अर्थ — इदारा 29
- हिन्दोस्तान में अख़्लाकी ज़वाल — मौ० असरारूल हक़ 30
- इस्लाम और दहशतगर्दी — शमशेर 32
- औरत की आज़ादी का ढोंग — शमीम इक़बाल 33
- फलों का बे ताज बादशाह सेब — डॉ० शफ़ीक़ 36
- मज़ेदार फल आम — मु० गुफ़रान 37
- रब का आदेश — इदारा 38
- औरत (न ज) — 39
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — डॉ० मुईद अशरफ़ 40

❑❑❑

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

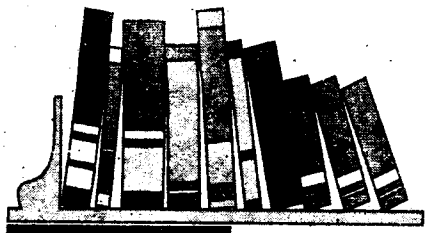

दुन्या क्या है?

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

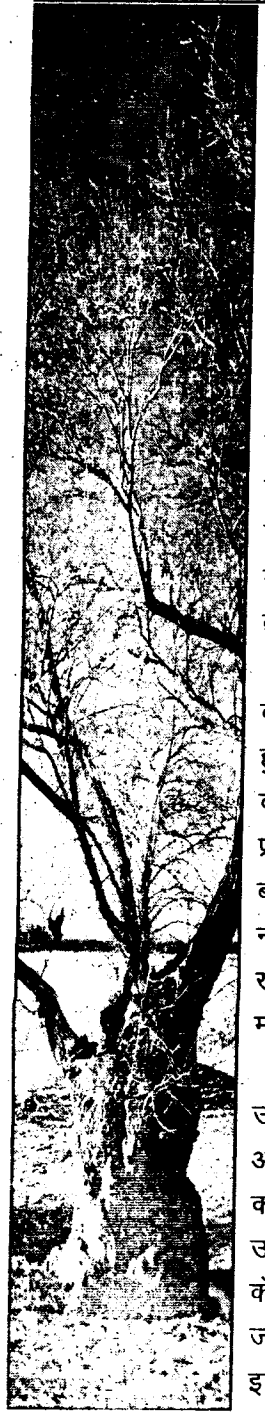

आप कहेंगे क्या अद्भुत प्रश्न है? अरे यही दुन्या है जिस में हम पैदा हुए सब लोग पैदा हुए, मां की गोद में पले बढ़े, मां का प्यार देखा, बाप का लाड पाया, और बढ़े खिलौने खेले, स्वादिष्ट मिठाइयां खायीं, स्कूल गये, लिखना पढ़ना सीखा, अध्यापकों की डांट, पिटाई, अपनी चाल, ढिटाई, कभी पास, कभी फेल, कोई प्राइमरी भी पूरा न कर सका, कोई हाईस्कूल तक पहुंचा, किसी ने ग्रेजुएशन किया तो कोई पोस्ट ग्रेजुएट बना, किसी ने डाक्ट्रेट कर लिया, धनानुसार कोई इंजीनियर बना कोई डाक्टर बना, किसी को ऊंची पोस्ट मिली, तो किसी ने धूल छानी, कोई श्रमिक बना तो कोई व्यापारी, कोई ठेकेदार हुआ तो कोई लीडर, शादी हुई, भोग विलास का आनन्द लिया। खान, पान, रंग रलियां, बाप बने, कोई स्वस्थ रहा तो कोई निरा रोगी। रिश्ते, नाते, दोस्त, दुशमन, कभी प्यार व महब्बत के गीत तो कभी लड़ाई झगड़ा, लाठी डण्डा बल्लम, फरसा, तीर, तलवार, बन्दूक़, पिस्तोल, कचेहरी, मुक़दमा, कभी सुख की नींद कभी रात्र जागरण, चुभन पीड़ा, सांप, बिच्छू, मक्खी, मच्छर, खटमल, जूं, चीलर, कोई फुट पाथ पर, कोई झोंपड़ी में बेख़बर तो कोई महलों में भी पहरों में, कोई चटनी रोटी में मस्त, तो कोई सत्तू ही पर बस, तो कोई एयर कण्डीशन में पूड़ी, कचौड़ी, मालपुवा के स्वाद से आनन्दित आदि आदि यही तो दुन्या है, फिर इस पर प्रश्न कैसा?

हां भाई यह वर्णन तो कड़वी मीठी दुन्या के भी अन्त तक न पहुंचा : "जो जा के न आए वो जवानी देखी "का वर्णन तो हुआ परन्तु" जो आके न जाए वो बुढ़ापा देखा" का उल्लेख ही न हुआ, फिर यह भी कहने वाले ने कह डाला, क्या बुढ़ापा आके नहीं जाता? मौत उसे भी तमाम कर देती है। मौत तो जब भी आ जाए परन्तु बुढ़ापे से छुटटी दिलाने के लिए तो उसे आना ही है। अब प्रश्न उठता है कि मौत के पश्चात क्या है? मां के पेट में जो बच्चा होता है यदि वह समझ और बोल सके तो अपनी माता के गर्भाशय (रहिम) के अतिरिक्त किसी संसार (दुन्या) से न अवगत है ना ही उस की पुष्टि कर सकता है। परन्तु जब वह इस दुन्या में आया और उसकी बुद्धि के नेत्र खुले तो बिना किसी ओर छोर की दुन्या देख कर चकित रह गया। इसी प्रकार मौत के पश्चात मानव जब नेत्र खोलेगा तो चकित रह जाएगा।

गर्भाशय की दुन्या में इस सांसारिक दुन्या से अवगत होना आवश्यक न था अतः प्रकृति ने उस की व्यवस्था न की परन्तु इस जगत (दुन्या) के पश्चात जो जगत (दुन्या) आने वाला है जिसे आख़िरत (परलोक) कहते हैं, जिस में ख़त्म न होने वाला जीवन मिलेगा उस आख़िरत के जीवन का सुख तथा दुख दोनों इस जगत (दुन्या) के विश्वास तथा कर्मों पर निर्भर हैं अतः इस दुन्या में उस दुन्या के ज्ञान तथा उन विश्वासों और कर्मों से परिचित होना आवश्यक था जिन के द्वारा वहां के कष्टों से बचा जा सके और सृष्टा को प्रसन्न करके वहां के पुरस्कार तथा सुखों को प्राप्त किया जा सके और सत्य यह है कि उस ज्ञान के प्राप्ति के लिये मानव के पास कोई साधन न था, अतः इस आवश्यक ज्ञान को मानव तक पहुंचाने का प्रबन्ध सृष्टा ने स्वयं किया और अपने सन्देष्टाओं

द्वारा यह ज्ञान मानव जाति तक पहुंचाने की व्यवस्था की और आगे पीछे हर काल में तथा हर क्षेत्र में सन्देष्टाओं द्वारा अगली दुन्या के शाश्वत जीवन में सुख दिलाने वाले ज्ञान तथा आदेशों से अवगत कराया और जब मानव उन्नति की पूर्ति हो गई और जब विधाता ने तै कर दिया कि अब जितनी भी उन्नति होगी मानव मस्तिष्क, सभ्यता तथा नागरिकता में ऐसा बदलाव न आएगा कि जीवन यापन विधि में कोई बदलाव लाने की आवश्यकता हो तो सृष्टा ने अपने अन्तिम सन्देष्टा महादूत हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अन्तिम शरीअत (विधान) देकर भेज दिया। अब मानव के लिये कोई गुंजाइश न रही कि वह अपने ख़ालिक़ व मालिक (सृष्टा तथा स्वामी) को भूल कर इस दुन्या में व्यस्त हो जाए, यदि ऐसा हुआ तो यही दुन्या है। एक फ़ारसी भाषी महा पुरूष ने इस को इस प्रकार कहा है :

अहले दुन्या काफ़िराने मुतलक़ अन्द
रोज़ो शब दर ज़क़ज़क़ो दर बक़बक़ अन्द
चीस्त दुन्या अज़ ख़ुदा ग़ाफ़िल बुदन
नै क़ुमाशो नुक़रओ फ़र्ज़न्दो ज़न

अनुवाद : दुन्या वाले बड़े ही कृतघ्न हैं बस रात दिन दुन्या की बक बक, झग झग में लगे रहते हैं। (फिर वह स्वयं ही प्रश्न करते हैं कि) जानते हो दुन्या क्या है? (फिर स्वयं ही उत्तर देते हैं कि) दुन्या ख़ुदा से ग़ाफ़िल होने का नाम है, यह सांसारिक जीवन की सामग्री, यह सन्तान, यह स्त्री यह दुन्या नहीं है।

यह मानव इस दुन्या में इसी लिये भेजा गया है कि वह अपने सृष्टा तथा विधाता को भूले नहीं उस पर विश्वास रखे रहा यहां घर बनाना, भवन निर्माण करना, खाने पहनने का अच्छा प्रबन्ध करना, शादी विवाह करना, यह सब तो जीवन की आवश्यकताएं हैं। "ला रूहबानियतः फ़िल् इस्लाम" इस्लाम में सन्यास नहीं हैं अलबत्ता यह जीवन आवश्यकताएं ख़ालिक़ व मालिक (सृष्टा तथा स्वामी) अल्लाह को याद रखते हुए उस के आदेशानुसार पूरी की जाएं तो यह दुन्या न कहला कर दीन कहलाएंगी परन्तु यदि यही दुन्या की आवश्यकताएं यहां का भोग विलास ख़ालिक़ व मालिक को भुला कर प्राप्त की जाएं तो यह दुन्या कहलाएंगी तथा इनकी गिनती कृतघ्नता (ना शुक्री में हो जाएगी) बुद्धिमान तथा सफल लोग वही हैं जो यह जीवन अपने सृष्टा तथा स्वामी के आदेशानुसार बिताते हैं, विधाता ने सन्यास का आदेश नहीं दिया है अपितु मन माने ढंग से सांसारिक जीवन (दुन्या) न बिताकर विधाता के बनाए हुए विधान के अनुसार जीवन बिताने को कहा है यह तो उसकी कृपा है, दया है, कि उसने अपने विधान से परिचित कराया अन्यथाः

कैसे फिर होता अहो, मानव का उद्धार।
यदि सन्देश न भेजता अपना जगदाधार।।

अतः वही पुरूष महा पुरूष हैं जो न तो अपने मन से विचार कर इस दुन्या को त्याग देते हैं न मन माने ढंग से दुन्या अपनाते हैं अपितु अपने सृष्टा के अन्तिम सन्देष्टा से पाए हुए विधाता विधान के अनुसार जीवन बिताते हैं और अपने ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह को किसी आन नहीं भूलते ऐसे हो लोगों के विषय में पवित्र क़ुर्आन हमें सूचित करता है –

कुछ लोग हैं जिन को उनका व्यापार या किसी वस्तु की क्रय विक्रय अर्थात सांसारिक (दुन्या की) व्यस्तता अपने मालिक अल्लाह की याद तथा नमाज व जकात की अदाएगी में बाधित नहीं होते वह उस दिन से भयभीत रहते हैं जिस दिन बहुत से दिल पलट जाएंगी और बहुत सी आखें उलट जाएंगी। (अन्नूर : ३७)

(शेष पृष्ठ १४ पर)

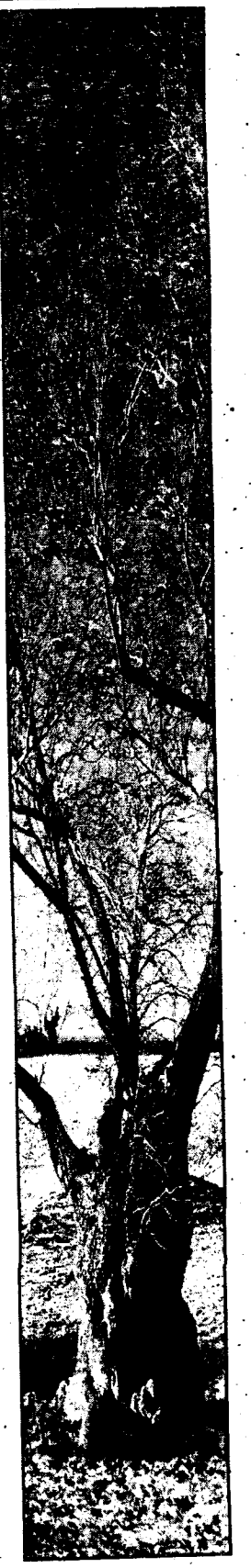

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंज़ूर नोमानी

तक़वा की निशानियाँ और तक़वा वालों की सिफ़तें

जैसा कि पहले विस्तार से बताया जा चुका है, तकवा अस्ल में दिल की एक ख़ास कैफ़ियत का नाम है। फिर उस कैफ़ियत के दिल में होने से आदमी एहतियात (सावधानी) और परहेजगारी की जो जिन्दगी गुज़ारता है उस को भी तक़वा कह दिया जाता है।

कुरआने मजीद में कई जगहों पर इस की भी वज़ाहत की गयी है कि इन्सान की अमली जिन्दगी पर तकवा के क्या असरात (प्रभाव) होते हैं, और अहले–तकवा की ख़ास निशानियां क्या हैं। चन्द आयतें इस बारे में भी पढ़ लीजिये। सूरए बकरह के बिल्कुल शुरू ही में इर्शाद है :–

तर्जमा : यह किताब (कुरआने–मजीद) हिदायत है मुत्तक़ी बन्दों के वास्ते (वही इस से नफ़ा उठायेंगे, ये मुत्तकी बन्दे वे हैं जिन का हाल यह है कि)वे बिन देखी बातों पर ईमान लाते हैं, और खूब अच्छी तरह नमाज़ अदा करते हैं, और हम ने उन को जो कुछ दिया है उसमें से (हमारी राह में भी) ख़र्च करते हैं। (बक़रह : २,३)

यहां अहले – तक़वा की मोटी–मोटी तीन अ़लामतें बयान की गयी हैं।

१ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की बतलायी हुई उन ग़ैबी हक़ीक़तों को दिल से मानना और उन पर ईमान लाना जिन को आदमी अपने तौर पर जान नहीं सकता (मसलन अल्लाह तआ़ला की ज़ात–व–सिफात, कयामत व आख़िरत और जन्नत–दोज़ख़ वग़ैरा)।

२. नमाज़ अच्छी तरह अदा करना।

३. अल्लाह के दिये हुए माल में से उस के हुक्म के मुताबिक उस की राह में ख़र्च करना।

पर जिस शख़्स में इन में से कोई एक बात न पाई जाये, समझ लेना चाहिए कि उस का दिल तकवा से खाली है। फिर इसी सूरए–बकरह में आगे एक मौके पर फर्माया गया है –

तर्जमा : नेकी करने वाले (जिन की अल्लाह तआ़ला की निगाह में क़द्र–व–कीमत है) अस्ल में वे बन्दे हैं जो ईमान लाये सच्चे दिल से अल्लाह पर, और यौमे–आखिर पर, और मलाइका पर, और अल्लाह की किताब पर, और नबियों पर, और अपना चहीता माल उन्होंने अल्लाह की मुहब्बत में (उस के हुक्म के मुताबिक़) दिया, अपने (हाजतमन्द) रिश्तेदारों को और आम यतीमों (अनाथों) ग़रीबों को और (ज़रूरतमन्द) मुसाफ़िरों और साइलों (भिक्षुकों) को और (ख़र्च किया) गुलामों को आज़ाद कराने में, और अच्छी तरह क़ाइम की उन्होंने नमाज़, और अदा की ज़क़ात, और पूरा करने वाले अपने अ़हद को जबकि किसी से कोई अ़हद करें, और सब्र करने वाले तंगी और तकलीफ़ व मुसीबत के वक़्त और हक़ व बातिल की लड़ाई में, यही हैं सच्चे मुत्तक़ी बन्दे। (बक़रह १७७)

इस आयत में बताया गया है कि सच्चे और मुत्तक़ी वे लोग हैं जिन में तक़वे की ये निशानियां पाई जायें –

१. वे ईमान रखते हों अल्लाह पर, और अल्लाह के फ़रिश्तों पर और अल्लाह की किताबों पर नुबुव्वत के पूरे सिलसिले पर।

२. और माल की मुहब्बत व चाहत के बावजूद अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये वे उस माल को बे दरेग (निःसंकोच) ख़र्च करते हों अपने हाजतमन्द क़राबत दारों (क़रीबी लोगों अर्थात रिश्तेदारों) पर, सामान्य मिस्कीनों (ग़रीबों), यतीमों पर, और ज़रूरतमंद मुसाफ़िरों और साइलों पर, और अल्लाह के बन्दों को ग़ुलामी की क़ैद से आज़ाद कराने पर –

३. और यह भी कि वे पूरी फ़िक्र के साथ नमाज़ और ज़कात अदा करने वाले हों।

४. ज़बान के सच्चे और वादे के पक्के हों।

५. और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक और उस की राह में तंगियां सख़्तियां झेलने वाले और हक़ पर दृढ़ता के साथ क़ाइम रहनेवाले हों।

और सूरए–आलि अिम्रान में इर्शाद फ़रमाया गया है –

तर्जमा : लोगों ! तेज़ी से बढ़ो और दौड़ो अपने पर्वरदिगार की बख़शिश और उस फैली हुयी जन्नत की तरफ़ जिस का फैलाव आस्मान और ज़मीन जैसा है, वह उन मुत्तक़ी बन्दों के लिये तैयार की गयी है (जिन की सीरत–चरित्र यह है कि) वे ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, खुशहाली में भी और तकलीफ़ और तंगी में भी और जो आपस के भेदों और झगड़ों में गुस्से को पी जाते हैं, और दूसरे लोगों के कुसूर (गलतियां) मआफ़ कर देते हैं, और अल्लाह ऐसे नेकोकार बन्दों से मुहब्बत करता है। और (वे बन्दे भी मुत्तक़ीयों ही में शामिल है और जन्नत के वे भी हक़दार हैं) जिन का हाल यह है कि अगर कभी अकस्मात कोई शर्मनाक बात उन से हो जाती है या कोई गुनाह (अपराध) कर के वे अपने ऊपर जुल्म कर बैठते हैं तो तुरंत अल्लाह उन्हें याद आ जाता है फिर वे उस से अपने गुनाहों और ख़ताओं की मआफी चाहते हैं। और कौन है सिवा अल्लाह के जो बख़शे गुनाहों को। (और फिर वे उस गुनाह से बाज़(दूर)रहते हैं) और जान बूझ कर उस पर इसरार (आग्रह) नहीं करते (और उसे अपनी आदत नहीं बनाते)।(आलि इम्रान : १३३–१३५)

इस आयत में अहले तक़वा की निशानियां ये बयान की गयी हैं कि वे खुशी व राहत और तकलीफ़ व मुसीबत दोनों हालतों में खुदा को याद रखते हैं और उसके हुक्मों के मुताबिक़ उस की राह में अपना कमाया हुआ माल ख़र्च करते हैं। और अपने व्यक्तिगत मुआमलों में गुस्से को पी जाने वाले और कुसूर वालों (अपराधियों) को मुआफ़ कर देने वाले होते हैं। आगे फ़रमाया गया है कि – और जिन लोगों का हाल यह है कि अगर कभी शैतान के धोके या नफ़्स के फ़रेब में आकर उन से कोई नाशाइस्ता हरकत या कोई गुनाह हो जाता है तो उन्हें अल्लाह तआला और उस का अज़ाब याद आ जाता है। और फिर वे सच्चे दिल से उस से मुआफ़ी मांगते हैं और गुनाह को वे आदत नहीं बनाते, वे भी मुत्तक़ियों ही में शामिल हैं। और यही आखिरी बात सूरए अराफ़ में इन शब्दों में बयान फ़रमायी गयी है –

तर्जमा : जिन बन्दों के दिलों में तक़वा होता है उन का हाल यह होता है कि जब कभी शैतान की तरफ़ से कोई चर्का (घाव) उन को लगता है (और वह ख़बीस उन पर फन्दा डालता है) तो तुरन्त ही उन में चौंक पैदा हो जाती है और उनकी ईमानी बसीरत बेदार हो जाती है (और फिर वे उस के जाल से निकल जाते हैं)। (अअ़राफ़ २०१)

और सूरए–हज्ज में तकवा का एक ख़ास असर यह बतलाया गया है कि जिस दिल में तक़वा होगा अल्लाह से संबंध रखने वाली तमाम चीजों का बहुत अदब और उनकी बहुत ताज़ीम करेगा। जैसे अल्लाह की किताब, अल्लाह के रसूल, अल्लाह की मस्जिदों ख़ास कर खानए – कअ़बा, इसी तरह अल्लाह के नाम और अल्लाह वालों का वह अदब करेगा। बहरहाल अल्लाह तआला से सम्बन्ध रखने वाली तमाम चीजों का उन के मरतबे के एतिबार से ताज़ीम और उन का अदब करना भी तक़वे की ख़ास निशानियों में से है। इर्शाद है –

तर्जमा : और जो बन्दे ताज़ीम करें अल्लाह के शआइर (यानी उस से ख़ास निस्बत रखनेवाली चीजों की) तो उन का यह अदब व ताज़ीम का रवैया उन के दिलों के तक़वे का नतीजा है। (अलहज्ज : ३२)

और इसी वजह से सूरए–हुजुरात में बारगाहे नबवी (सल्ल०) का अदब करने वालों के बारे में इर्शाद फ़रमाया गया है –

तर्जमा : जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुजूर में (दब की वजह से) दबी आवाज़ से बोलते हैं वही वे हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने जांच कर चुन लिया है तक़वा के लिये उन के लिये अल्लाह की मुआफ़ी है और बड़ा सवाब है।

तो इन आयतों से मालूम हुआ कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब और इसी तरह अल्लाह से ख़ास सम्बन्ध व निस्बत रखने वाली हर चीज़ की ताज़ीम तक़वे के लाज़मी असरात में से है। जो बे अदब और बेबाक इस से महरूम (वंचित) हैं, उन के दिलों को तक़वे का कोई ज़र्रा भी नसीब नहीं।

तक़वे के आसार और अहले–तक़वा के औसाफ़ के सिलसिले में अब सिर्फ़ एक आयत और पढ़ लीजिए। सूरए–ज़ारियात में अहले–तक़वा को जन्नत और उसकी नेमतों की खुशखबरी सुनाते हुए इर्शाद फ़रमाया गया है –

तर्जमा : यकीनन हमारे मुत्तक़ी बन्दे बिहिश्ती बागों में और खूबसूरत

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का इनआम

हज़रत अबू ज़र (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है कि जो भलाई करेगा उसको दस गुना सवाब मिलेगा। या उससे जियादः। और जो बुराई करेगा तो उसकी जज़ा उसके मिस्ल होगी या मैं बख़्श दूंगा, और जो मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है मैं उससे एक हाथ क़रीब होता हूं और जो मुझ से एक हाथ क़रीब होता है, मैं उस से दो हाथ क़रीब होता हूं और जो मेरी तरफ़ चलकर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूं और जो मुझसे ज़मीन भर गुनाहों के साथ मिले लेकिन मेरा शरीक न ठहराया तो मैं उससे उतनी ही बख़्शिश के साथ मिलूंगा। (मुस्लिम)

अल्लाह का शरीक न ठहराने वालों पर जन्नत वाजिब है

हज़रत जाबिर (र०) से रिवायत है कि एक अ़राबी ने नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह कौन सी दो चीजें वाजिब करने वाली हैं। आपने फ़रमाया, जो इस हाल में मर गया कि अल्लाह के सिवा किसी को शरीक न ठहराया वह जन्नत में दाख़िल होगा। और जो इस हाल पर मरा कि अल्लाह का शरीक ठहराया उस पर दोज़ख़ वाजिब होगी। (मुस्लिम)

आं हज़रत (सल्ल०) का ख़ुशख़बरी देना

हज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ऊंट पर सवार थे और हज़रत मआ़ज़ (र०) आपके पीछे थे। आपने फ़रमाया, ऐ मआ़ज़! अ़र्ज़ किया, हाज़िर हूं या रसूलुल्लाह। फ़रमाया, ऐ मआ़ज़! अ़र्ज़ किया, हाज़िर हूं या रसूलुल्लाह। फ़रमाया कोई बन्दः सच्चे दिल के साथ गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं। तो अल्लाह ने उस पर दोज़ख हराम की। मआ़ज़ ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह ! क्या मैं इसकी ख़बर लोगों को दे दूं, जिससे वह ख़ुश हो जायें। आपने फ़रमाया, नहीं वह भरोसा करने लगेंगे तो हज़रत मआ़ज़ (र०) ख़ामोश हा गये। लेकिन अपनी वफ़ात के वक़्त अ़िल्म छुपाने के गुनाह से डर कर लोगों को ख़बर दे दी।

सिद्क़ दिल से ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर-सूलुल्लाहि कहना जन्नत में दाख़िल करेगा

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि ग़ज़वए तबूक के दिन लोगों पर फ़ाक़ों की नौबत आ गयी। लोगों ने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! हम को इजाज़त दीजिए कि हम अपने ऊंटों को जिबह करके खायें और उनकी चर्बी लगायें। अपने इजाज़त दे दी। हज़रत उमर (र०) आये और अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! या रसूलुल्लाह! अगर आपने ऐसा किया तो सवारी की कमी हो जायेगी। आप यह कीजिए कि उनके सामानों को मंगवाइये और उसमें उनके लिये अल्लाह तआ़ला से बर्कत की दुआ़ कीजिए। शायद अल्लाह तआ़लाउसमें बरकत अ़ता फरमाये। आपने फ़रमाया, हां, आपने एक चमड़ा मंगाया और उसको बिछा दिया; फिर उनके सामानों को मंगाया। कोई एक मुट्ठी ज्वार लाया, कोई एक मुट्ठी खजूर, और कोई एक टुकड़ा लाया। इस तरह चमड़े पर थोड़ा–बहुत जमा हो गया। फिर आपने बर्कत की दुआ़ की और फ़रमाया, अपने बर्तनों को भरो। लोगों ने भरना शुरू किया; यहां तक कि पूरे लश्कर ने अपने–अपने बर्तन भर लिये और इतना खाया कि सेर हो गये, और भी कुछ बच रहा। आपने फ़रमाया, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं उसका रसूल हूं। जो अल्लाह का बन्दा इन दोनों के साथ अल्लाह से इस हालत पर मिलेगा कि शक करने वाला न हो तो उसके लिए जन्नत वाजिब है।

हज़रत उत्बान (र०) बिन मालिक बिन मालिक से रिवायत है कि मैं अपनी क़ौम बनी सालिम को नमाज़ पढ़ाता था। मेरे और उनके दर्मियान एक नाला था। जब बारिश होती थी तो उसको पार करके मस्जिद पहुंचना बहुत मुश्किल मालूम होता था। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और अ़र्ज़ किया, या

रसूलुल्लाह! मेरी बसारत कम हो गयी। मेरे और मेरी क़ौम के दर्मियान एक नाला है जो बहता है। जब बारिश आती है तो मुझे उसके पार करने में बड़ी दिक्क़त होती है। मैं चाहता हूं कि आप मेरे घर तशरीफ़ लाकर एक जगह नमाज़ पढ़ाएं। फिर मैं उसी को अपनी नमाज़ की जगह बना लूं। आपने फरमाया, अच्छा मैं इन्शाअल्लाह आऊंगा। दूसरे दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) और हज़रत अबूबक्र (र०) खूब दिन चढ़े तशरीफ़ लाये और अन्दर आने की इजाज़त चाही मैं ने अर्ज़ किया तशरीफ लाइए। आप तशरीफ़ लाये और बैठने से पहले पूछा, अपने घर में नमाज के लिये कौन सी जगह तजवीज की है। मैंने जिस जगह नमाज़ पढ़ने का इरादः किया था उसी की तरफ इशारः किया। आप खड़े हो गये और और तक्बीर कही। हमने आपके पीछे सफें बांधीं, आपने दो रकअत नमाज़ पढ़कर सलाम फेरा। मैंने आपके लिये हरीरः तैयार कराया था इसलिए मैंने आपको तशरीफ़ रखने की ज़हमत दी। जब मुहल्ला वालों ने सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर में तशरीफ़ रखते हैं तो लोग आने लगे। इस तरह बहुत लोग जमा हो गये। एक आदमी ने कहा कि मालिक को क्या हुआ, मैं उनको यहां नहीं देखता। दूसरे साहब बोले वह तो मुनाफिक है, उसको अल्लाह और उसके रसूल से कोई मुहब्बत नहीं। आपने फ़रमाया यह न कहो क्या तुम उसको नहीं देखते हो कि वह लाइलाह इल्लल्लाहु कहता और उसकी वजह से अल्लाह की रिज़ा चाहता है कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादा जानते है। लेकिन हम तो यही देखते हैं कि उसकी दोस्ती व मुहब्बत और सारा बोलना चालना मुनाफ़िकों से है। आपने फ़रमाया, जिसने अल्लाह की रिज़ा चाहते हुए ला इलाह इल्लल्लाह कहा, अल्लाह ने उस पर दोज़ख हराम की। (बुखारी)

अल्लाह तआला मां बाप से ज़ियादः शफ़ीफ़ हैं

हज़रत उमर (रज़ि०) बिन अलख़त्ताब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में कुछ क़ैदी आये; उन क़ैदियों में एक औरत को देखा कि जिस बच्चे को देखती है तो दौड़ती है और उसको उठाकर चिमटा लेती है। आपने फ़रमाया, भला ऐसी चाहने वाली औरत अपने बच्चे को आग में डालने की रवादार हो सकती है? हमने अर्ज़ किया खुदा की क़सम, नहीं। आपने फ़रमाया, अल्लाह को अपने बन्दों पर इससे ज़ियादः शफ़क़त है, जितनी इस औरत को अपने बच्चे से है।

हज़रत अबू हुरैरः ! (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने मख़लूक़ को पैदा किया तो किताब में जो उसके पास अर्श पर है लिख दिया– बेशक मेरी रहमत मेरे गुस्से पर ग़ालिब है। और एक रिवायत है कि मेरी सबक़त मेरे गुस्से पर सबक़त ले गयी। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि अल्लाह के लिए सौ रहमतें हैं। निन्नानवे हिस्से अपने पास रक्खे और एक हिस्सा दुनिया में उतारा। उस एक हिस्से की बदौलत मख़लूक़ आपस में मुहब्बत करती है। यहां तक कि जानवर अपने बच्चे से अपना खुर इस डर से उठा लेता है कि उसके लग न जाये।

एक रिवायत में है कि अल्लाह के लिए सौ रहमतें हैं। उसमें से एक हिस्सा जिन व इन्सान, जानवरों और कीड़ों में उतारा गया। उसी के सबब एक दूसरे पर नर्मी करते हैं, एक दूसरे का लिहाज़ करते हैं, और एक दूसरे पर रहम करते हैं। अल्लाह तआला ने रहमत के निन्नानबे हिस्से क़ियामत के लिए रक्खे हैं। क़ियामत में अपने बन्दों पर उसके ज़रीये रहम करेगा। (मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने जिस दिन आसमान व जमीन को पैदा किया उसी दिन रहमत को भी पैदा किया। उनमें एक रहमत जमीन पर है जिसके सबब मां अपने बच्चों पर रहम करती है और जानवर वगैरः एक दूसरे पर। जब कियामत का दिन होगा तो वह एक दुनिया की रहमत भी निन्नानबे रहमतों में मिला कर पूरी सौ कर लेगा।

तौबःगुनाह का कफ़्फ़ारः है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है – जब बन्दः कोई गुनाह करता है और कहता है, ऐ अल्लाह! मेरा गुनाह बख़्श दे, तो अल्लाह तआला फ़रमाता है, मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उसको यक़ीन है कि उसका एक रब है जो गुनाह बख़्श भी देता है। और पकड़ता भी है। फिर वह गुनाह करता है और कहता है कि ऐ मेरे रब मुआफ़ कर दे। तो अल्लाह

तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया और वह जानता है कि उसका एक रब है जो गुनाह मुआफ़ भी करता है और पकड़ता भी है। फिर वह गुनाह में मुब्तिला हो जाता है और कहता है कि ऐ अल्लाह दरगुज़र फ़रमा। तो अलह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उसको अ़िल्म है कि उसका एक मालिक है जो ग़लती से चश्मपोशी भी फ़रमाता है। और सज़ा भी देता है। तो मैंने अपने बन्दे को मुआफ़ कर दिया, जो चाहे करे। (बुखारी--मुस्लिम)

बख्शिश चाहना बन्दगी की दलील है

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, उसकी कसम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुम गुनाह न करो तो अल्लाह तुमको उठा लेगा और एक ऐसी क़ौम को लायेगा जो गुनाह करेंगे और अल्लाह से बख़्शिश चाहेंगे तो अल्लाह उनको बख़्श देगा। (मुस्लिम)

हज़रत अबू अय्यूब (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि अगर तुम गुनाह न करोगे तो अल्लाह तआ़ला ऐसी मखलूक पैदा करेगा जो गुनाह करेगी। और अल्लाह उनको बख़्श देगा। (मुस्लिम)

सच्चे दिल के साथ ला इलाह इल्लल्लाहु कहने वालों को जन्नत की बशरत

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में हज़रत अबू बक्र (र०) हजरत उमर (र०) और हम चन्द आदमी हाजिर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास से उठकर कहीं तशरीफ़ ले गये, देर हो गयी और तशरीफ़ नहीं लाये। हम डरे कि नसीबे दुश्मनाँ कहीं कोई ख़तरा तो पेश नहीं आया। हम सब घबराये और उठ खड़े हुए। सबसे पहले मैं ही घबराया। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम की तलाश में निकला। तलाश करते--करते अन्सार के एक बाग़ की तरफ़ आया (आगे उन्होंने पूरी तफ़सील सुनाते हुए कहा कि) रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, जाओ जो तुम्हें बाग़ के पार मिले और सच्चे दिल के साथ गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं उसको जन्नत की बशरत दो।

आंहज़रत (सल्ल०) का उम्मत के लिए बेक़रार होना

हज़रत अ़ब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र (र०) बिन अलआ़स से रिवायत है कि नबीं (सल्ल०) ने इब्राहीम (अ़०) का यह कहना दुहराया जो अल्लाह तआ़ला ने कुरआन मजीद में नक़ल फ़रमाया है --

अनुवाद : ऐ परवरदिगार बेशक मअ़बूदाने बातिल ने बहुत लोगों को गुमराह किया पस जो मेरा इत्तिबाअ़ करेगा वह मुझसे है। (सू० इब्राहीम : ३६)

फिर हज़रत अ़ीसा (अ़०) का क़ौल पढ़ा :--

अनुवाद : अगर तू उन पर अ़ज़ाब करे तो यह तेरे बन्दे हैं तुझे हर तरह इख़्तियार है। और अगर तू उनको बख़्श दे तो बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (सू० माअिदः ११८)

फिर आपने हाथ उठाये और फ़रमाया, अल्लाहुम्म उम्मती--उम्मती और फ़रमाकर रो दिये। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरील (अ) से फ़रमाया कि मुहम्मद (सल्ल०) के पास जाओ और पूछो कि आप क्यों रोये; हालांकि तुम्हारा रब खूब वाकिफ है। जिबरील (अ०) आये और पूछा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिबरील (अ़०) को अपने रंज का सबब बतलाया। अल्लाह तआ़ला तो जानता ही था, फ़रमाया ऐ जिबरील! (अ़०) मुहम्मद (स०) के पास जाओ और कहो कि अ़न्क़रीब तुम्हारी उम्मत के बारे में हम खुश कर देंगे और तुम्हें रंज न देंगे। (मुस्लिम)

(पृष्ठ ६ का शेष)

बहते चश्मों में रहेंगे। उन का पर्वरदगार जो खा़स नेमतें उन को देगा, वे उनको (अपने हाथों में) वहां लेंगे। ये बन्दे पहले से थे अच्छे काम करने वाले, रातों को ये थोड़ा सोते थे (और जियादा वक्त नमाज़ और जिक्र व दुआ़ वग़ैरा अ़िबादतों में गुज़ारते थे) और सहर (सुबह) के वक़्तों में फिर अल्लाह तआ़ला से मुआ़फ़ी और बख़्शिश की दुआ़एं मांगते थे। और उनके माlलों में हिस्सा था जरूरतमन्द साइलों और हारे हुए आफत रसीदों का। (अज़्ज़ारियात : १५--१६)

इस आयत से मालूम हुआ कि तक़्वा के ख़ास आसार में से यह भी है कि आदमी रात को कम सोये और उस की रातों का जियादा जिस्सा अल्लाह की याद, उस की इबादत और दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में गुज़रे। और इस के बाद भी वह मुतमइन और बेफ़िक्र न हो, बल्कि रात इस तरह गुज़ारने के बावजूद अपने को ख़ताकार और क़ुसूरवार (अपराधी) समझते हुए सहर के वक़्त अपने अल्लाह से मुआ़फ़ी और बख़्शिश ही का सुवाल करे। और अपनी दिन की कमाई में ज़रूरतमन्द साइलों और ऐसे नादार बन्दों को हिस्सेदार बनाये जो किसी बीमारी या किसी और आफ़त की वजह से जरूरियात के मुहताज हो गये हों। इन सब आयतों को जमा करने से तक़्वे वाली ज़िन्दगी की एक पूरी तसवीर तैयारी हो जाती है।

अल्लाह तआ़ला हमारे दिलों को तक़्वे के नूर (रोशनी) से मुनव्वर (प्रकाशत) फरमाये। और हमारी ज़िन्दगियों को मुत्तक़ियों वाली जिन्दगी बनाये। और हमारे साथ चलने वालों और हमारी, बाद की नसलों को भी तक़्वा नसीब फर्माये।

(तीसरी किस्त)

हम कैसे पढ़ायें ?

विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

अध्याय दो
अध्ययन की परिधि या शिक्षण की विषय वस्तु

विषय की विवेचना : यहां शिक्षण की विषय वस्तु का सवाल सिर्फ प्राइमरी विद्यालय तक सीमित रखा जायेगा जिस में छः या सात साल से चौदह साल तक की उम्र के बच्चे होते हैं। अर्थात यहां सिर्फ उस पाठ्यक्रम से बहस की जायेगी जिसका तअल्लुक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा से है। इस लिये यहां मौजूदा समाज विभिन्न तबकों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जायेगा, बल्कि यहां उस पाठ्यक्रम पर गौर किया जायेगा जो आम सरकारी स्कूलों में रायज है या होना चाहिए।

क्या और कितना पढ़ाया जाये ?

यह सही है कि मदरसों में इन्सानी इल्म के तमाम संकायों की शिक्षा देना न तो व्यवहारिक है और न शायद पसन्दीदः, लेकिन इतना जरूर होना चाहिए कि मानव अनुभवों और दिलचस्पियों का कोई अहम पहलू नजर अन्दाज न होने पाये जैसा कि हम पहले जिक्र कर चुके हैं।

भाषा : सब से अधिक महत्वपूर्ण भाषा की शिक्षा है अगर भाषा का वजूद न होता तो विचार जो हमारे अनुभवों को सुव्यवस्थित करते हैं समझे नहीं जा सकते थे और मानव मानसिक ऐतबार से दूसरे जानवरों के स्तर से कभी ऊंचा नहीं उठ सकता था। दूसरे यह कि इन्सानी जिन्दगी से लगाव पैदा करने के लिये भी भाषा जानना अत्यावश्यक है। क्योंकि एक दूसरे का मतलब समझने का सिर्फ यही एक जरियः है। लेहाजा स्कूल का पहला काम सरल और सही भाषा सिखाना है।

अगर तमाम दुनिया की एक ही जबान होती तो इन्सान का ज्ञान भण्डार निश्चय ही बहुत तेजी से बढ़ता, क्योंकि अब जो समय गैर मुल्की भाषाओं में क्षमता प्राप्त करने के लिये खर्च किया जाता है, वह इस हालत में विचार और परिकल्पनाओं को समझने और तरक्की देने में खर्च होता। मौजूदा जमाने में बहुत सी भाषायें हैं जिनके दामन इल्मी खजानों से भरे हुए हैं, इन खजानों से फायदा उठाने के लिये इन भाषाओं का जानना जरूरी है। लेकिन यह समस्या प्राथमिक शिक्षा की सीमा से बाहर है। इस मंजिल में मातृ–भाषा के अलावा किसी गैर भाषा की शिक्षा लाभदायक होने के बजाय हानिकारक होगी। इस थोड़े समय में एक से अधिक भाषाओं के सिखाने की कोशिश करना मातृ भाषा के हक में बड़ा जुल्म होगा। प्राथमिक शिक्षा के लिए जिस कदर विषय वस्तु की जरूरत है हमारी मातृ भाषा में उससे कहीं ज्यादा मौजूद है।

भाषा के हिस्से

भाषा के पांच भाग हैं, बोलना, पढ़ना, लिखना, निबन्ध और व्याकरण। इनमें से हर एक पर हम बारी बारी बहस करेंगे। इससे यह न समझना चाहिए कि यह अंश महज़ सफ़ाई और समझाने की खा[illegible] होगी।

बोलना : जब बच्चा बोलने के काबिल हो जाता है अर्थात् विभिन्न आवाजों को अदा करने की सलाहियत उस में पैदा हो जाती है तो दूसरों को बोलते सुन कर उनकी आवाज को नकल करने की कोशिश करता है, धीरे धीरे वह अपना मतलब दूसरों पर स्पष्ट करने लगता है यहां तक कि जब वह स्कूल में दाखिल होता है तो उसे शब्दों के एक माकूल जखीरे पर काबू होता है और वह अपनी भाषा खासी रवानी (सहजता) और कम व बेश शुद्धता के साथ बोल लेता है। अलफाज की सेहत का दारोमदार घर और आस पास की संस्कृति (रहन–सहन का ढंग) तमद्दुनी हालत पर है। हमारे मुल्क में तालीम की बहुत कमी है। इस लिये हमारे स्कूलों में जो बच्चे शुरू शुरू में दाखिल होते हैं उन की जबान में व्याकरण और उच्चारण (तलफ्फुज) दोनों किस्म की गल्तियां होती हैं। उस्ताद का फर्ज है कि वह इन गल्तियों की इस्लाह करे सुधारे। और उचित ध्वनि का ख्याल रखा जाये तो कवायद (व्याकरण) और तलफ्फुज की इन गल्तियों का खात्मा हो जायेगा जो तकरीबन हर दर्जे के लोगों से आम बात चीत में या जल्सों में तकरीर करते वक्त अकसर सरजद होती है। बोलने का काम जारी रहेगा।

आजकल हमारे मदरसों की पूरी जिन्दगी भर इजहारे ख्याल (मौखिक अभिव्यक्ति) की मश्क (अभ्यास) पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। नया बच्चा मदरसे में दाखिल हुआ और उस्ताद ने उसे तख्ती दी और उस पर कुछ नुकूश बना दिये और कहा "पढ़ो", जैसे अलिफ, बे वगैरः। इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे का जी न सिर्फ इस बेमअनी सी हरकत से उकता जाता है और वह मदरसे से भागने लगता है बल्कि उस की जेहनी तरक्की (बौद्धिक विकास) रूक जाती है। बुनियादी तालीम की स्कीम में यह तजवीज़ किया गया है कि मदरसे में दाखिल होने के बाद छः महीने तक बच्चे को महज जबानी बातचीत करने दी जाय। और ख्यालात के जाहिर करने में उस की झिझक दूर हो जायेगी और उसका जेहन खुल जायेगा।

पढ़ना :

पढ़ने की क्रिया (अम्ल) दर असल छपी हुई या लिखी हुई अलामतों और उनकी आवाजों में तअल्लुक पैदा करने पर निर्भर है। लेकिन यह सिर्फ इसका मेकानकी पहलू है। पढ़ने का काम उस वक्त तक कोई मअनी नहीं रखता जब तक उसमें मानसिक सक्रियता शामिल न हो यानी जब तक समझ बूझ कर न पढ़ा जाये। पढ़ना दो किस्म का होता है बआवाज पढ़ना और खामोश पढ़ना, शुरू में बआवाज पढ़ने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि यह खामोश पढ़ने के मुकाबले आसान अमल है। बआवाज पढ़ने में मफहूम व मतलब के समझने में आवाज मदद देती है लेकिन खामोश पढ़ने में सिलसिले की एक कड़ी यानी आवाज गायब होती है और अलामत से एक दम मतलब तक पहुंचना होता है इसके लिये निस्बतन ज्यादा पुख्तः जेहन चाहिए। इस लिये जब तक बआवाज पढ़ने के जरियः इबारत का मतलब समझने की काफी मश्क न हो जाये खामोश पढ़ने का काम शुरू नहीं करना चाहिए।

बआवाज पढ़ने में बोलने की तमाम विशेषतायें अर्थात शुद्ध उच्चारण, चढ़ाव–उतार और मुनासिब रफतार का ध्यान रखना चाहिए। और इस बात पर जोर देना चाहिए जो कुछ पढ़ा जाये सोच समझकर पढ़ा जाये। और आवाज के उतार चढ़ाव से वह भावनायें जो किसी इबारत में मौजूद हैं जाहिर हों। यह एक ऐसी खूबी है जिसको पैदा करने के लिये काफी अभ्यास की जरूरत है।

खामोश पढ़ने का मक़सद मतलब तक पहुंचना है अर्थात यह एक साधन है दूसरे मकसद को हासिल करने का न कि बजाय खुद एक मकसद है। इस सिलसिले में भी रफतार का ख्याल रखना जरूरी है। विद्यार्थी जीवन में बच्चे को पढ़ने की क्रिया में इतनी सहूलत और दिलचस्पी हो जानी चाहिए कि स्कूल छोड़ने के बाद भी वह इस काम को जारी रख सकें, नहीं तो यह आशंका है कि कुछ समय बाद पढ़ा लिखा सब भूल जायेंगे।

प्राथमिक विद्यालयों की अन्तिम कक्षाओं पढ़ने के लिए कुछ ऐसा लिट्रेचर मुहय्या करना चाहिए जिसे बच्चे शौक से पढ़ें। और चुनाव करने में अध्यापक को उनका मार्गदर्शन करना चाहिये ताकि बच्चे स्कूल से कुछ ऐसी दिलचस्पियां लेकर निकलें कि वह अपने फुरसत के समय को अपनी पसन्द की चीजों के पढ़ने पर खर्च करें। अगर यह बात पैदा नहीं की जा सकती है तो पढ़ने का शैक्षिक महत्व सन्देहप्रद है। क्योंकि पढ़ने का शौक उन्हें अच्छे और बुरे दोनों रास्ते दिखा सकता है। बाजार में अखलाक बनाने और बिगाड़ने वाला दोनों किस्म का लिट्रेचर मौजूद है, अब यह पढ़ने वाले की पसन्द पर है कि वह किसे पसन्द करता है। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

प्रतिष्ठा मानव की

"पैगम्बरों ने इन्सानों को बतलाया था कि अगर तुम ने अपने को दुनिया के अधीन कर लिया और इच्छाओं के वशीभूत हो गये, गुलाम हो गये तो यह सारा जीवन अस्वाभाविक और अव्यवस्थित हो जायेगा। और एक ऐसी अनार्की फैलेगी कि यही दुनिया तुम्हारे लिये नरक बन जायेगी।

कुरआन में बतलाया गया है कि इन्सान को पैदा करके फरिश्तों को उस के आगे झुकाया गया जिससे यह सीख मिलती है कि मानवता का यह एक अपमान है कि अपने पैदा करने वाले के सिवा किसी के सामने झुके। जब कि खुदा के बाद उसके फरिश्ते ही सब से ज्यादा झुकने के काबिल थे। क्योंकि वह इस दुनिया के अभिकर्ता हैं, वह खुदा के हुक्म से बारिश लाते हैं, हवाएं चलाते हैं। जिस प्रकार एक हाकिम अपने नाइब का अपने सलाहाकरों से परिचय कराता है उसी तरह खुदा ने इन्सान के आगे फरिश्तों को झुका कर एक परिचय या इन्ट्रोडक्शन कराया कि इन्सान की नस्ल को कियामत तक के लिये यह सबक याद रहे कि वह खुदा के सिवा किसी के आगे झुकेगा नहीं।"

किस्त दो

कारवाने ज़िन्दगी

अबुल हसन अली हसनी नदवी

ख़ानदान, वतन और बचपन

ख़ानदान के हालात उसकी शराफ़त और नामवरी को बढ़ा चढ़ा कर लिखना उन लेखकों की पुरानी कमजोरी है जिन्हें किसी उच्च ख़ानदान में (जिसमें एक लम्बे समय तक विशिष्ट व्यक्ति पैदा होते रहे हैं,) पैदा होने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। शायद इसीलिये हिन्दुस्तान में फारसी का पुराना व्यंग "पिदरम सुल्तान बूद" मशहूर है। लेकिन यहां इन पंक्तियों के लेखक को इसलिये इस की जरूरत नहीं है कि जिला रायबरेली के हसनी कुतबी सादात के वंशज और उसके विख्यात व्यक्तियों के परिचय पर इतना लिखा जा चुका है कि अब "आप बीती" में इसको नये सिरे से पेश करने या इस पर कुछ लिखने की जरूरत नहीं।

सम्भवतः हिन्दुस्तान में सादात की दो शाखाओं बिलग्राम के हुसैनी वास्ती सादात और रायबरेली के हसनी कुतबी शाखाओं पर जितनी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं सादात की दूसरी शाखाओं पर कम लिखी गई होंगी।

बिलग्राम के वास्ती सादात में इतिहासकार मीर गुलाम अली बिलग्रामी (मृत्यु १२०० हिज्री) पैदा हुए जिन्होंने मासिरुल किराम, ख़ज़ान–ए–आमिरः, यदे बैज़ा, और सरो आजाद, लिखकर बिलग्राम को अमर बना दिया। रायबरेली के हसनी खानदान में मौलाना सैयद नोमान, मोलवी हकीम सैयद फखरूद्दीन और मौलाना हकीम सैयद अब्दुल हयी ने इस खानदान का नाम रौशन किया। इनकी महान कृतियों (क्रमशः एलामुल हुदा सैयद नोमान की, सैयद फखरूद्दीन की सीरतुस्सादात, सीरते अलमिया और मेहरजहांताब, सैयद अब्दुल हयी की तज़किरतुल अबरार, और नुज़हतुल ख्वातिर (आठ खण्डों में) ने ख़ानदान का नाम उजागर किया। रायबरेली के इसी ख़ानदान में तेरहवीं सदी हिज्री के प्रारम्भ में युग पुरूष सैयद अहमद शहीद पैदा हुए।

कोई ख़ानदान उत्थान–पतन के विश्वव्यापी कानून से परे नहीं।

हिन्दुस्तान में जिस खानदान का इतिहास पढ़ा जाये, ऐसा मालूम होता है कि वह ख़ानदान आदि से अन्त तक एक बे ऐब मिसाली ख़ानदान रहा है, यह बात वास्तविकता से परे है। यह ऐतिहासिक सच है कि क़ौम, समुदाय, व ख़ानदान उतार चढ़ाव, कमाल–जवाल से दोचार होते रहते हैं। इस कानून से कोई ख़ानदान और समुदाय परे नहीं। कुरआन कहता है–

अनुवाद : देखो हम ने किस तरह बाज को बाज़ पर फज़ीलत बख़्शी।

हमारे नबी सल्ल० ने फरमायाः–

अनुवाद : "जिसको उसके अमल ने पीछे डाल दिया उसको उसका वंशज आगे नही बढ़ा सकता।

हमारे ख़ानदान का मामला भी यही है कि वह उत्थान पतन दोनों दौरों से गुज़रा है उसकी पिछली और वर्तमान पीढ़ी और एक ही काल और एक ही स्थान के परिवार के सदस्यों में महान अन्तर रहा है। इसमें विभिन्न समयों में दीनी व एख़लाकी कमजोरियां भी यक़ीनन आई होंगी।

कुछ एक ऐतिहासिक विशेषतायें

किन्तु इस असमानता के बावजूद, ख़ानदान के पिछले इतिहास पर जिस क़दर नज़र डाली और उसका मौजूदा दौर जो खुद अपनी आंखों से देखा उसमें कुछ एक बातें कामन फैक्टर्स के तौर पर नजर आयीं।

१. ख़ानदान के सुरक्षित इतिहास से पता चलता है कि इस खानदान ने अपने नसब की हिफ़ाजत बहुत बड़ी हद तक की है जिसका न शरीअ़त ने बोझ डाला है और न बहुत से अ़रब देशों में इसको ज़रूरी समझा गया है। बहुत बड़ी हद तक इसलिए कहता हू कि इस खानदान ने हमेशा सादात ही में या कभी कभी जाने माने शेख घराने में रिशता करना ज़रूरी समझा और अगर कभी किसी ने खुले तरीक़े पर बाहर शादी कर ली तो ख़ानदान ने अगरचः उसको बिरादरी में शामिल रखा लेकिन खुसर या दामाद नहीं बनाया। इसका इतना फायदा ज़रूर हुआ कि ख़ानदानी विशेषता व परम्पराओं का सिलसिला बड़ी हद तक क़ायम रहा और ख़ास तौर से अक़ायद (आस्था) में कोई फ़र्क़ नहीं आया। बाद में यह बात इस हद तक बढ़ी कि दायरा सिमटते सिमटते बहुत सीमित हो गया और इसका असर औलाद की शारीरिक गठन

और काठी पर पड़ा और बाज़ बीमारियां वरसः में बंटती चली गईं।

२. यह ख़ानदान हिन्दुस्तान में अपने आगमन से लेकर (अर्थात सातवीं सदी हिज्री के मध्य से) मुझे समझ आने तक खालिस अकीद–ए–तौहीद पर कायम रहा और शिर्क व बिदअत से दूर रहा। इसकी एक खुली हुई दलील (तर्क) यह है कि इस खानदान के किसी बुजुर्ग की कब्र पुख्ता और इस पर गुम्बद व इमारत नहीं है, अगर कहीं किसी कब्र के पुख्ता या चारदीवारी होने का अपवाद है तो वह बाढ़ से सुरक्षा या किसी और विशेष कारण से है, इसी तरह ख़ानदान में कभी किसी दौर में किसी बुजुर्ग के उर्स का मनाना सुना नहीं गया, न किसी शाख़ में फ़ातेहः, क़ुल, तीजे या चालीसवें का रिवाज है। और जहां तक इस खानदान के सब से बड़े केन्द्र नसीरा बाद (ज़िला रायबरेली) और दायरः शाह अ़लमउल्लाह (शहर रायबरेली) का सम्बन्ध है, वहां क़ब्रें ऐसी ख़ाम (कच्ची) और बिना किसी तख़्ती और कत्बः (शिलालेख) के हैं जैसी सऊदी हुकूमत के बाद मक्का और मदीना में नज़र आती हैं।

३. इस ख़ानदान की एक विशिष्टता जो इस के अक्सर ऐतिहासिक काल में कायम रही मर्दानगी, दीन की हमीयत (लाज) और जिहाद (धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध) की भावना है।

४. इस खानदान के व्यक्तियों में उस सिफत की कमी नजर आती है जिसको चालाकी सियासी ज़िहानत (राजनीतिक होशियारी) कहा जाता है। उनमें एक तरह की सादा दिली या भोलापान पाया जाता है। और आम हालात में इसमें ज़ालिम बनने से ज़्यादा मज़लूम बनने, किसी को नुक़सान पहुंचा कर नफ़ा हासिल करने से ज़्यादा खोने और नुक़सान उठा लेने की सलाहियत (क्षमता) का पता चलता है। इसमें निश्चय ही हर युग में अपवाद रहे होंगे।

५. इस ख़ानदान का रिश्ता हमेशा किसी न किसी तरह से शरीअत और तरीक़त से जुड़ा रहा और इसमें धार्मिक नेता (उल्मा) और रूहानियत के शैख़ पैदा होते रहे जिनमें से बाज़ मशायख़ (धर्मगुरू) का सिलसिला दूर–दूर पहुंचा।

६. खानदानी हालात के अध्ययन से पता चलता है कि इस ख़ानदान में कभी दौलत व सरवत की बहुतात नहीं रही, ज़्यादातर ग़रीबी व तंगी का दौर गुज़रा।

यह वह कुछ एक ख़ानदानी सिफ़ात हैं जिनका उल्लेख यहां किया गया और जिसके शतप्रतिशत सही होने अथवा विशफुल थिंकिंग (एच्छिक विचार) से आज़ाद रहने का दावा नहीं किया जा सकता कि –

'हविस सीने में छिप छिप कर बना लेती है तस्वीरें।'

ददिहाल और ननिहाल

यहां इस आप बीती में मैं अपने दादा मोलवी हकीम सैयद फ़ख़रूद्दीन साहब और अपने नाना हज़रत शाह ज़ियाउन्नबी साहब का परिचय नहीं करा सकता और न इसकी ज़रूरत समझता हूं कि इन दोनों हज़रात के विस्तृत विवरण मेरी किताब "हयाते अब्दुल हयी" और "कारवाने ईमान व अज़ीमत" में और "नुज़हतुलख्वातिर" खण्ड ८ में आ गये हैं/अपने पिता स्व० मौलाना हकीम सैयद अ़ब्दुल हयी साहब और माता सैयदः खैरून्निसा साहिबा का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करना है, कि इन दोनों पर भी मेरी दो किताबें "हयात अब्दुल हयी" और "जिक्र खैर" प्रकाशित हो चुकी है, और दरिया को कूजू में बन्द करना बहुत दुशवार है अलबत्ता इसका उल्लेख जरूर करूंगा कि मेरे ददिहाल और ननिहाल का मिलाप किस तरह हुआ, और इस में अल्लाह तआला ने कैसी बरकत दी। इस भाग को मैं अपनी किताब जिक्रे खैर से नकल करता हू कि इस में बहुत सी नसीहत का सामान है –

"जिस तरह ख़ानदान में हमारे नाना साहब का घर सब से ज़्यादा खाता–पीता खुशहाल और प्रभावशाली था हमारे दादा साहब के यहां इसी क़दर इस चीज़ की कमी थी, यहां कोई जायदाद और जमींदारी लम्बे समय से न थी। ख़ानदान की इस शाख़ में बहुत ऊपर से इल्मे दीन का सिलसिला चला आ रहा था, और यह मोल्वियो का घराना मशहूर था, यहां जायदाद के बजाय कुछ किताबों का भण्डार और दीनी इल्म पीढ़ी दर पीढ़ी ट्रास्फर होता रहा, और यही इसकी सबसे बड़ी जायदाद थी इसी दौर में ख़ास तौर पर घर में एक तरह की तंगी थी। दादा साहब एक बड़े हकीम विद्वान और लेखक थे। लेकिन तबीयत में बेनियाज़ी और खुद्दारी थी, रोज़ी–रोटी की तरफ़ कभी पूरा ध्यान नहीं दिया। घर में किसी किसी समय फ़ाक़ा हो जाना भी कोई अद्भुत बात न थी।

स्वर्गीय पिता जी नदवा में प्रबन्धक थे, पहले तीस चालीस रूपये मासिक के मुलाज़िम थे, फिर उसको भी न लिया। ऐसी हालत में जब मेरे पिता की दूसरी शादी का सन्देश हज़रत

शाह ज़ियाउन्नबी साहब के यहां उनकी बेटी सैयदः ख़ैरून्निसा साहिबा के लिए पहुंचा तो मेरी नानी साहिबा को इसे स्वीकार करने में बड़ा असमंजस रहा। औरतें इन मामलों में ज़्यादा दूरबीं और संवेदनशील होती हैं। घर से घर मिला हुआ था, वह घर के हालात से वाकिफ़ थीं इन साहिबज़ादी की पहली बात उन्हीं के चचेरे भाई से जो ज़िले के छोटे मोटे तालुक़ेदार थे, आ चुकी थी। उसके मुक़ाबले में इस ग़रीब घर के पयाम को प्राथमिकता देना उनकी समझ में न आया। जानबूझकर बेटी को तकलीफ़ में डालना उनके नज़दीक कोई अक़्लमन्दी की बात न थी। लेकिन नाना साहब को वालिद साहब से बड़ी मुहब्बत थी, वह उनकी योग्यता से वाकिफ़ थे। पयाम आते ही वह खिल गये। गोया उनकी मुराद बर आई। नानी साहिबा से उन्होंने साफ़ कह दिया कि सैयद (वालिद साहब को खानदान में लोग सैयद मियां कहते थे) होनहार और विद्वान जवान हैं मैं उन पर किसी की प्राथमिकता नही दे सकता। मेरे नज़दीक ग़रीबी और अमीरी का कोई मतलब नहीं है, असल देखने की चीज़ सलाहियत और इल्म है।

स्वयं माता जी इस किस्सा को अपनी पत्रिका में इस प्रकार बयान करती हैं –

"जिस तरफ़ से ज़्यादा कोशिशें थीं वह मेरे चचा का घर था, दो बहनें मेरी इस घर में ब्याही जा चुकी थीं, यह घर एक मुद्दत से सरसब्ज़ और आबाद था, दुनियावी एतबार से घर खूबी में बेमिसाल था, माल व दौलत, इज़्ज़त, शर्म व हया सूरत व सीरत, ग़रज़ इस से बेहतर कोई घर न था, यह हमारे लिए गौरव की बात थी। माता जी का झुकाव उसी तरफ था, अपने सगे भाई के घर पर भी उसको प्राथमिकता देतीं, और मुझे भी यह घर प्यारा था, तमाम बातें मेरे अनुकूल थीं, मगर पिता जी का विचार था कि ग़रीब हो मगर मुतक़्क़ी (खुदा से डरने वाला) और परहेज़गार हो, यह खूबी यहां नहीं पाई जाती थी।"

इस कशमकश और इन्तेज़ार में माता जी ने कई ऐसे स्वप्न देखे जिन में पिता जी के घर की तरफ इशारा था, और यह कि अगर दोनों घर मिल गये तो अल्लाह तआला की तरफ से खास इनायतें होंगी। इसी दौरान उन्होंने एक स्वप्न देखा जिसका बयान करती हुई वह लिखती हैं –

"एक रात में मैं ने सपना देखा कि खास उस मालिके करीम, रहमान व रहीम की इनायत व मेहरबानी से एक आयते करीमा मुझे हासिल हुई, सुबह तक वह जबान पर जारी थी, मगर कुछ खौफ ऐसा था कि मैं बयान न कर सकीं, मुंह से निकलना दुशवार था और उस का अर्थ भी मुझे मालूम न था, जब मानी देखे तो खुशी से फूल गई, और तमाम गम भूल गई, अपनी इस खुशनसीबी पर फ़ख़ किया और इस ख्वाब को बयान किया, जो सुनता रश्क करता और पिता जी तो खुशी में रोने लगे, वह आयत यह है –

अनुवाद : सो किसी को मालूम नहीं जो छिपा धरा है उनके वास्ते आंखों की ठंडक बदला उसका जो करते थे। (सूरः सज्दः १७)

अन्ततः नाना साहब का फैसला और इरादा ग़ालिब रहा और १३२२ हिज्री (सन् १९०४) में सकुशल यह रिश्ता हो गया। दादा साहब इस रिश्ते से बहुत खुश थे। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(पृष्ठ ४ का शेष)

पिछले अंक के सम्पादकीय लेख में अपनी जानकारी के अनुसार स्त्रियों के विषय में लिखा था जिस का संक्षेप यह था कि वही मुस्लिम स्त्रियां सरकारी ऊंचे पदों पर पहुंचती हैं जो इस्लामी आदर्शों को विदा कर चुकी होती है। हमारी एक बहन को यह बात बुरी लगी और उन्होंने सख्त एअ़तिराज़ किया मैं उन से और उन तमाम बहनों से जो शरीअ़त की पाबन्दी के साथ सरकारी पदों पर हैं हज़ार बार मुआ़फ़ी चाहता हूं परन्तु उन से अनुरोध है कि वह मुझे मुआ़फ़ करते हुए ऐसी बहनों का परिचय भेजें जो शरीअ़त की पाबन्दी के साथ सरकारी पदों पर हैं हम आधुनिक आदर्श स्त्रियां शीर्षक के अन्तर्गत उनका परिचय छापेंगे। साथ ही ईमानदारी के साथ लिखें कि क्या नवजवानों की सहशिक्षा में शरीअ़त की पाबन्दी होती है?

इस विषय पर हम अपनी बहन बेटियों के लेखों का स्वागत करेंगे।

इस्लाम में दहशतगर्दी अवैध है। कोई दीनदार दहशतगर्दी की कल्पना भी नहीं कर सकता। बम विस्फोट में आ़म तौर से बेगुनाह लोग मारे जाते हैं। इस्लाम तो नाहक़ जानवरों की जान लेने को भी महापाप बताता है, बेगुनाह इन्सानों की जान लेने वाले का ठिकाना तो जहन्नम है।

टूटे हुए दिल की बड़ी कीमत है

"प्रभू ने कहा तुम को मालूम नहीं मनुष्य में कैसे–कैसे गुण हैं। उससे ज्ञान की सरिता कैस फूट निकलती है। समुद्र में वह विशालता और गहराई न होगी जो उसमें है। उसकी आंखों में प्रेम की जो चमक है वह पेश करने में तुम असमर्थ हो। उसके दिल में नर्मी है, कसक है, प्रेम है, उस पर दर्द की चोट लगती है। फरिश्तों के पास यह दौलत नहीं।

इन्सान के पास जो सब से बड़ी पूंजी है वह दया की पूंजी है वह प्रेम की पूंजी है। वह एक आंसू है जो इन्सान की आंख से किसी बेवा के सर को नंगा, किसी गरीब के चूल्हे को ठंडा देखकर और किसी मरीज की कराह को सुनकर टपक पड़ता है। आंसू का वह बून्द जो समुद्र में डाल दिया जाये तो उसे पवित्र कर दे, गुनाहों के जंगल में डाल दिया जाये तो सब को जला कर रौशनी से बदल दे। फरिश्ते सब कुछ पेश कर सकते हैं किन्तु आंसू की वह बून्द नहीं पेश कर सकते जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के लिये बहाता है।

इन्सान के पास सबसे अनमोल चीज यह है कि वह दूसरे के दुख–दर्द से प्रभावित होता है। उसके अन्दर प्रेम की एक चिनगारी है उसे लहकाने वाली कोई चीज मिल जाय तो वह लहक उठती है। फिर वह इन्सान न मजहब को देखता है, न सम्प्रदाय को न वतन को, न देश को देखता है। इन्सान इन्सान का दिल देखता है, उसके दर्द महसूस करता है जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है उसी प्रकार इन्सान के दिल का चुम्बक इन्सान के दिल को खींचता है।

अगर इन्सान से यह दौलत छीन ली जाये तो वह दीवालिया हो जायेगा। यदि कोई देश इस से महरूम हो जाय, अगर अमरीका की दौलत, रूस की व्यवस्था, अरब देशों के पेट्रोल के कुएं हों, हुन बरसता हो, सोने और चांदी की गंगा–यमुना बहती हो, लेकिन उसके देश में प्रेम का स्रोत सूख चुका हो तो वह देश कंगाल है उस देश पर अल्लाह की रहमत न होगी।

अली मियां

प्रस्तुति एम०हसन अंसारी

बीमार के हुक़ूक़

सैयद सुलेमान नदवी
अनुवाद : इरफान फारूकी नदवी

दुन्या का एक और कमजोर वर्ग जो हमारी हमदर्दी का मुस्तहिक़ (पात्र) है वह बीमारों और रोगियों का है। यह लोग सामान्य रूप से अपनी देख–रेख और अपने कार्य स्वयं नहीं कर सकते, उन हमदर्दी के लाइक इन्सानों की देख भाल, उनकी सेवा, उनके गम को बांटना और उनकी सहायता करना भी इन्सानियत का एक फर्ज है और उसी कर्तव्य का नाम अरबी में इयादत है।

इन बीमारों के साथ इस्लाम ने सबसे पहले हमदर्दी यह दिखाई कि वह बहुत से फराइज जिन के अदा करने से वह मजबूर व लाचार हैं, या जिनको करने से उनका रोग बढ़ सकता है उनको या तो बिल्कुल माफ कर दिया या कम कर दिया है और कुरआन ने इस के लिये एक कानून बना दिया।

"और न रोगी पर कोई तंगी है।" (सूरः नूर ६)

"न अंधे पर तंगी है कि वह जिहाद में जाए और न लंगड़े पर और न बीमार पर।" (अल्फत्ह : १७)

"न कमजारों पर और न बीमारों पर (जिहाद में न जाने की वजह से पूछ–ताछ होगी) (सूरः तौबा ६१)

बीमारों के लिए वुजू माफ है।

"या तुम बीमार हो तो तयम्मुम करो।" (सूरः माइदा आयत नं ६)

इसी प्रकार उस से तहज्जुद की लम्बी नमाजें माफ हैं –

"अल्लाह को पता था कि तुम में कुछ बीमार भी होंगे।" (सूरः मुज़म्मिल आयत नं० २०)

इसी प्रकार हज के अहकाम व आदेश में भी रोगी के लिए आसानी रखी गई है। (तो तुम में जो बीमार हो (सूरः बकरः आयत १९६)

रोजा तोड़ने की उसको इजाजत दी गई है, खड़े होकर नमाज न पढ़ सके तो बैठकर और बैठने की भी ताकत न हो तो लेट कर नमाज पढ़ने का हुक्म है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब अल्लाह तआला ने उससे अपने फराइज माफ कर दिए या उनसे इतनी कमी कर दी तो लोगों को अपने अखलाकी हक के लेने में कितनी कमी कर देनी चाहिए।

इस्लाम ने रोगी की तकलीफ को जिस पर वह सब्र (धैर्य) शुक्र करता है उसके लिए गम की जगह खुशखबरी की चीज बना दिया है।

इस्लामी नजरिया (दृष्टिकोण) यह है कि मुसलमान को दुन्या में जो तकलीफ भी पहुंचती है वह उसके गुनाह का कफ्फारा (बदला) बन जाता है, अगर वह बीमार हो जाए और सब्र के साथ बीमारी की तकलीफों को बर्दाश्त करे तो आखिरत के कठोर अजाब (दण्ड) से बचाने के लिए वह उसके गुनाहों का बदला बन जाता है और वह पाक व साफ हो जाता है।मुस्लिम, अबूदाऊद)

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रोगियों की इयादत का विशेष रूप से हुक्म दिया है, उसके आदाब व ढंग सिखलाए हैं, उसकी दुआएं सिखाई हैं और उसका सवाब (पुण्य) बताया है। फरमाया "जो कोई किसी मुसलमान के गम को हल्का करेगा अल्लाह तआ़ला उसके गम को हलका करेगा। (अबूदाऊद)

और यह भी फरमाया कि एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं "जिनमें एक यह है कि जब वह बीमार पड़े तो उसकी इयादत करे। (बुखारी)

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहते हैं कि आप सल्ल. ने हम को सात बातों का हुक्म दिया जिन में से एक बीमार की इयादत है। (बुख़ारी)

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जब कोई सुबह को किसी बीमार की इयादत करता है तो शाम तक फरिश्ते उसकी बख़शिश की दुआ मांगते हैं और जब रात को इयादत करता है तो सुबह तक फ़रिश्ते उसकी मग़फ़िरत के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ करते हैं। (अबू दाऊद)

यह भी आया है कि "जब कोई किसी बीमार की इयादत को जाता है तो वापसी तक जन्नत के मेवे चुनता रहता है। (मुस्लिम) फ़रमाया "जब कोई किसी की इयादत के लिए जाए तो उसके हाथ और माथे पर हाथ रखे, और उसको दिलासा दे और उसके अच्छा होने के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ करे। (अबू दाऊद)

आप सल्ल० और आप की शिक्षा से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को बीमारों की इयादत का इतना ध्यान व एहतिमाम था कि वह उसको एक इस्लामी हक़ समझते थे बल्कि इसमें अपने और पराए, मुस्लिम और नान मुस्लिम का भी कोई अन्तर न था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम ने यहूदियों की इयादत की है। (बुख़ारी)

मुनाफिकों की भी इयादत के लिए आप गए हैं। (बुखारी) और इसी हदीस के कारण उलमा किराम ने नान मुस्लिम की इयादत की इजाजत दी है। (मजमउल बिहार)

हज़रत सअ़द बिन मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु जब ज़ख़्मी हुए तो आप सल्ल० ने उनका खेमा (तम्बू) मस्जिद में लगवाया ताकि बार–बार उनकी इयादत की जा सके। (अबू दाऊद)

हज़रत रूफ़ैदा रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया थीं जो सवाब के लिए घायल लोगों का उपचार और उनकी सेवा किया करती थीं उनका खेमा भी उसी मस्जिद में रहता था ताकि युद्धों में घायल हो जाने वाले मुसलमानों की मरहम पट्टी करें। (सीरते इब्ने हिशाम)

ग़ज़वात और युद्धों में भी कुछ औरतें साथ रहती थीं जो बीमारों की सेवा और घायलों की मरहम पट्टी किया करती थीं। (मुस्लिम)

आप (सल्ल०) ने बिगैर किसी भेद–भाव व अन्तर के अपने अनुयाइयों को यह हुक्म दिया है कि भूके को खिलाओ कैदी को छुड़ाओ ओर रोगी की इयादत करो। (मुस्नद अहमद)

एक बार आप (सल्ल०) इयादत की फजीलत नीचे लिखे हुए दिल को मोह लेने वाले बहुत ही प्रभावशाली ढंग से बताई है कि कियामत में अल्लाह तआ़ला पूछेगा कि ऐ आदम के बेटे ! मैं बीमार पड़ा तूने मेरी इयादत न की वह कहेगा ऐ मेरे रब! तू तो सारे दुन्या का पालनहार है मैं तेरी इयादत कैसे करता? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा क्या तुझे खबर न हुई कि मेरा फुलां बन्दा बीमार हुआ मगर तूने उसकी इयादत न की अगर तू करता तो मुझे उसके पास पाता। (मुस्लिम)

तअ़लीम के इस ढंग में बीमारों की इयादत उनकी सहायता और उनकी ख़िदमत व सेवा करने की कैसी हिदायत की गयी है। और ऐसा रोगी जो कि सब्र (धैर्य) व शुक्र से काम लेता है उसकी कैसी हिम्मत बढ़ाई गई है, कि मानो उसका रब उसके सरहाने खड़ा है और अपनी मेहरबानियों और रहम की नज़र उस पर डालता रहता है और उसके पद और दर्जे को बढ़ाता रहता है और कैसे भाग्यशाली हैं वह लोग जो इन रोगियों की सेवा करके अल्लाह तआला के निकट होते जाते हैं।

कन्या

कन्या को जाहिल मत रखो
उस को ख़ूब पढ़ाओ तुम
कन्याओं की विद्यालय में
ज्ञाता उसे बनाओ तुम
दीन सिखाओ सब से पहले
फिर दुन्या सिखलाओ तुम
उर्दू, हिन्दी, अ़रबी, इंग्लिश
रेखा गणित पढ़ाओ तुम
अंक गणित और बीजगणित
फिर रहन सहन पढ़वाओ तुम
जागरफी इतिहास पढ़ा कर
साइंस ज्ञान सिखाओ तुम
गृह विद्या देकर के उसको
गृहणी उसे बनाओ तुम
उसी के बच्चे पढ़ें लिखेंगे
इस को ध्यान में लाओ तुम

कम ही देखे

दरवेश अख़्तर लूनावाडी

अन्दाज यां दुन्या के सब ही देखे
रब से जो न गाफिल हों कम ही देखें
गुरबत भी यहां देखी दौलत भी देखी
दौलत पे न नाजां हों कम ही देखे
गैरों को यहां देखा अपने भी देखे
औरों के जो काम आएं कम ही देखें
है दोस्त यहां बेशक दुशमन भी है
वक्तों पे जो काम आएं कम ही देखे
वाइज भी यहां देखे नासेह देखे
रहबर सहीह मअनों में कम ही देखे
क़ाइल भी यहां देखे आमिल देखे
क़ाइल वो जो आमिल हों कम ही देखे
नफरत व महब्बत यहां दोनों देखीं
बे लौस महब्बत में कम ही देखे
हां नूर यहां देखा जुल्मत देखी
अख्तर जो बनें रहबर कम ही देखे
जो दर्द से गिरयां हों जखमी देखे
पर — दर्द के दरमां तो कम ही देखे
मुश्किल यहां देखी हल भी देखे
मुशकिल को करें हल जो कम ही देखे
नेता भी यहां देखे लीडर देखे
खादिम जो हों मिल्लत के कम ही देखे
कामिल यहां देखे मोजिद देखे
माहिर जो हों तेकनिक में कम ही देखे
शाअिर यहां देखे नाज़िम देखे
मौजूं करें शिअ़रों को कम ही देखे
ज़ाहिद भी यहां देखे सूफ़ी देखे
दरवेश बनें अख़तर कम ही देखे।

●●●

इमामे आज़म (रह०)

एक ऐसा व्यक्ति जिनके असहाब के अनुसार अगर वह बन्जर धरती को सोना कह दें तो उसे सोना सिद्ध कर सकते हैं। वह असहाबे रसूल के बाद अकेले व्यक्ति हैं जिसने इस्लामी शरीअत की व्याख्या जिस बड़े पैमाने पर की है कोई और न कर सका है। वह चारों इमामों में अकेले व्यक्ति हैं जिसने असहाबे नबी से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और उनकी छत्र–छाया में कुछ शिक्षण प्राप्त करने का सुअवसर पाया। वह व्यक्ति नोमान बिन साबित रह० अर्थात इमामे आजम अबू हनीफा रह०) हैं।

इमाम साहब का जन्म ८० हि० मे हुआ मां–बाप ने नोमान नाम रखा, आगे चलकर, अबू हनीफा कुन्नियत धारण की और इमामे आजम के लकब से प्रसिद्ध हुए। आपके दादा फारस (ईरान) के मूल निवासी थे और पारसी धर्म के अनुयायी थे परन्तु जब इस्लामी किरणें अरब की सीमा से निकल कर अजम पहुंची और उसकी किरणों ने फारस की धरती को प्रकाशमय कर दिया तो उनके दादा ने भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। इस्लाम लाने के बाद जब परिवार वालों ने परेशान किया तो मातृभूमि छोड़ कर कूफा पहुंचे जो इस्लामी गौरव व शिक्षा का अति महत्वपूर्ण केन्द्र बन चुका था। अतः वह वहीं का निवासी बनकर कपड़े का व्यापार शुरू कर दिया।

इमाम साहब ने प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त की, परन्तु २० वर्ष की आयु में उच्च शिक्षण प्राप्त करने का शौक पैदा हुआ। अतः एक दिन कूफा के मुख्य न्यायधीश अल्लामा शअबी से मुलाकात हुई जिन्होंने एक ऐतिहासिक नसीहत की कि तुम में विद्वानों जैसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं इसलिए विद्वानों के बीच बैठा करो। इस नसीहत ने इमाम साहब पर गहरा प्रभाव डाला और वह कूफा के प्रसिद्ध आलिम हजरत हम्माद रह० के शिष्यों की टोली में सम्मिलित हो गये। काबिल उस्ताद ने लायक शागिर्द के स्वभाविक जौहर पहचान कर विशेष ध्यान दिया और दो वर्ष तक हजरत हम्माद रह० की छत्र–छाया में रह कर फिक्ह (इस्लामी विधि) की समस्त शिक्षा ग्रहण की। इस संक्षिप्त समय में आपने गैर मामूली जेहानत के कारण फिक्ह की शिक्षा तो पाई ही बल्कि उस दौरान अपनी काबिलियत का प्रदर्शन भी प्रारम्भ कर दिया। आपने फिक्ह के साथ हदीस पढ़ने का सिलसिला भी शुरू कर दिया था क्योंकि आप जानते थे कि फिक्ह के मसलों की व्याख्या हदीस के बिना असम्भव है, अतः आपने कूफा की ओर रूख किया और इल्मे नबुव्वत के इस महान केन्द्र का कोई मुहद्दिस बचा न था जिस से आपने शिक्षा ग्रहण न की हो। विशेषता के सथ अल्लामा शअबी और इबराहीम बिन मुहम्मद आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। आप ने कूफा के बाद बसरा और फिर मदीना व मक्का की यात्रा की और अता बिन रबाह जैसे मुहद्दिस से शिक्षा ग्रहण की जिनको नजमुस्साकिब अब्बासी, ग़ाज़ीपुरी दो सौ हजराते सहाबा रजि० की छत्र छाया में रहने का सौभाग्य प्राप्त था।

कुछ तबकों में ये बात प्रसिद्ध है कि इमामे आजम रह० की हदीस में कोई पुस्तक नहीं है परन्तु सत्य ये है कि जिस अधिकता से इमाम साहब की मसनदें लिखी गईं किसी और की नहीं लिखी गई हैं, और उस समय के इमाम और हदीस के हाफिजों ने लिखी है जो स्वयं उसके अधिकारी थे उनकी मसनदें लिखी जाती। ये सब किताबुल आसार के अलावा है जो इल्मे हदीस में इमाम साहब की प्रसिद्ध पुस्तक है। ये बात सभी ने स्वीकार की है कि मुज्तहिद वही व्यक्ति हो सकता है जिसका कुरान, हदीस, इतिहास, लोग़त और क़यास पर पूर्ण नियंत्रण हो। स्पष्ट है कि इमाम साहब का मुज्तहिदे मुत्लक होना एक ऐसी हकीकत है जिस पर उम्मत का इज्मा है। अतः इमाम यह्या बिन कतान रह० ने कहा कि इमामे आजम उम्मते मुहम्मदीया में उस ज्ञान के सबसे बड़े विद्वान हैं जो अल्लाह और उसके रसूल से वारिद है। हदीस में अमीरूल मोमिनीन की उपाधि पाने वाले शैख इब्ने मुबारक के अनुसार आसार व हदीस और तकरीर समझने के लिये इस्लामी विद्वान इमामे आजम के मोहताज हैं।

आपने अपने उस्ताद हजरत हम्माद रह० के देहान्त के बाद चालीस वर्ष की आयु में मसनदे दर्स संभाला और अपने शिष्यों को फतावा व हदीस की शिक्षा देना प्रारम्भ किया। आपने बड़ी सुलझी हुई बात और अक़्ले सलीम

के माध्यम से अश्बाह व अम्साल पर क़यास का आगाज़ किया और उस फिक्ही मसलक की नींव डाली जिस ने आगे चलकर हनफ़ी मसलक का रूप धारण कर लिया।

आप ही की तरह आपके शिष्य भी उच्चस्तर के विद्वान और फिक्ह में अपने समय के इमाम कहलाये। आप के समस्त शिष्यों की तादाद बताना सम्भव नहीं है हां उन में इमाम अबू यूसुफ रह० इमाम मुहम्मद रह० और इमाम जुफर रह० अत्यधिक प्रसिद्ध है जिन्होंने अपने ज्ञान का डंका पूरे विश्व में बजा दिया।

सूफी फुजैल बिन अयाज का कथन है कि आप महान फकीह और आबिद थे और जब हलाल हराम का मसला पेश आता तो सत्य बात कह देते। बादशाह के माल से बहुत नफरत थी। जाफर बिन रबीअ रह० कहते हैं कि आप से अधिक कम बातें करने वाला किसी को नहीं देखा। जब फिक्ह से सम्बन्धित कोई बात ज्ञात की जाती तो नदी की तरह बहने लगते। आज के इल्म के गैर मुस्लिम भी कायल हैं। अतः डा० चार्ल्स लिखते हैं कि वह प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने दलीलों के रास्ते विधि के बिन्दू पर बहस की है और समस्त दुनियावी मामले को पड़ताल व व्याख्या से कानूनी रस्सी में जकड़ दिया है कि अचम्भा मालूम होता है।

आप में ऐसी व्यापारिक विशेषता व शैली पाई जाती थी जिस से ज्ञात होता है कि आप केवल एक महान इस्लामी विद्वान ही नहीं बल्कि एक आदर्शवादी व्यापारी भी थे। मन के ध़नी और लालच से कोसों दूर और अमानती जिम्मेदारियों को पूरा करने में लापरवाह न थे। इन्हीं विशेषताओं के कारण लोग आपको प्रथम खलीफा हजरत अबुबकर रजि० जैसा व्यापारी मानते थे मानो आप शबीहे सिद्दीक थे और उन्हीं के पथ पर चलने वाले एक पुर्ण व्यापारी थे। अब्बासी खलीफा मन्सूर अब्बासी ने इमाम साहब को समस्त इस्लामी जगत का मुख्य न्यायधीश बनाने की पेशकश की जिसको आपने शालीनता से मनाकर दिया इस पर खलीफा ने कठोर दंड देने का आदेश दिया। अतः प्रतिदिन दस कोड़े लगाये जाते, कुछ लोगों के अनुसार सौ कोड़े लगाये जाते यहां तक कि एड़ियों से खून जारी हो जाता। आखिरकार चार वर्ष की लगातार कैद के बाद आपको जहर दे दिया गया। अतः रजब १५० हि० का सवेरा इस्लामी दुनिया के दामन के लिये अत्यधिक बुरा समाचार लेकर आया अर्थात इमामे आजम इस समाप्त होने वाली धरती से कूच कर गये जिसने अपनी ७० वर्षीय जिन्दगी का हर क्षण इस्लाम के विकास की चिन्ता में समर्पित कर दिया था।

लेखक गण से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, स्पष्ट तथा सरल लिखें, पाठकों से अनुरोध है कि वह जब तब एक कार्ड लिखकर सच्चा राही के विषय में अपनी राय लिखें

(पृष्ठ ३६ का शेष)

फुरसत पाए नारी घर से
उस को काम बताओ तुम
काम करे तो साथ तुम्हारे
पर से उसे बचाओ तुम
पर के साथ इकट्ठा कर के
उस को न सुलगाओ तुम
नारी दे नारी को शिक्षा
शिक्षित उसे बनाओ तुम
बने शिक्षिका और चिकित्सक
ऐसा जतन जुटाओ तुम
करे चिकित्सा नारी जन की
ऐसा उसे सुझाओ तुम
सोचो तो तुम काम बहुत हैं
केवल नारी करे उन्हें
उन्नति के तो द्वार बहुत हैं
बुद्धि तनिक लगाओ तुम
शोषण जो नारी का चहते
तुम को अवसर दें गे ना
नारी ही समझे कुछ इस को
उसी को अब समझाओ तुम
नर नारी हैं सभी बराबर
नाद न ये दोहराओ तुम
जनेंगे नर भी अब क्या बच्चे
ये हम को बतलाओ तुम
डगर वही अपनाओ मित्रो
जिस पर हां चल पाओ तुम
नारी रहेगी घर की रानी
कमा के रोजी लाओ तुम

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : पानी के जानवरों का क्या हुक्म है? कुछ लोगों का कहना है कि पानी के सभी जानवर पाक हैं और हलाल है।

उत्तर : हां यह सहीह है कि पानी के सभी जानवर पाक हैं जैसे मछलियां तमाम क़िस्म की, सोंस, कछवा, मेडक आदि चाहे वह खुशकी में भी आते हों वह सब पाक हैं, उनका खून, गोश्त, खाल आदि सब पाक है अर्थात उन की यह चीजें शरीर (जिस्म) में या कपड़ों में लगी हों तो बिना धोये नमाज़ पढ सकते हैं लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक इन में से हलाल केवल मछली है दूसरे सभी पानी के जीव जंतु हराम हैं, उनका खाना जाइज़ नहीं ; झींगा में मतभेद हुआ है कि वह मछली है कि नहीं परन्तु अधिकतर अहनाफ़ उसे मछली कह कर हलाल बताते है। मौलाना अब्दुल हयी फ़िरंगीमहली मौलाना अशरफ़ अली थानवी मुफ़्ती अब्दुर्रहीम आदि ने किताबुल हयवान के सन्दर्भ से झींगा को मछली माना है और हलाल कहा है।

अलबत्ता इमाम मालिक (रह०) ने पानी के सभी जानवरों को हलाल कहा है, इमाम शाफ़ई (रह०) भी केकड़ा आदि को हलाल कहते हैं।

प्रश्न : गोह का क्या हुक्म है? हलाल है या हराम?

उत्तर : गोह और लोमड़ी के विषय में अहादीस से उनका मुबाह (खाना जाइज़) होना सिद्ध होता है लेकिन अहनाफ उसे मक्रूह तहरीमी (लगभग हराम) कहते हैं, अलबत्ता हंबली, शाफ़ई और मालिकी तीनों गोह खाते हैं।

प्रश्न : मरने वाले के कफ़न दफ़न का ख़र्च किस के जिम्मे है?

उत्तर : मरने वाले के कफ़न दफ़न का ख़र्चा सुन्नत के मुताबिक़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं) मरने वाले के तर्के (अर्थात छोड़ी हुई सम्पत्ति) से लिया जाएगा। कफ़न में मस्नून कफ़न से अधिक कपड़ा देना, सदक़ा ख़ैरात करना, तीजा चालीसवां आदि करना जाइज़ न होगा, अलबत्ता अगर सभी वारिस बालिग़ हों और वह इजाज़त दें तो तर्के से ख़र्च करना तो जाइज़ होगा लेकिन ग़ैर शरई और बिदआत में ख़र्च करने पर अल्लाह तआला की तरफ़ से पकड़ का भय है। लेकिन अगर मरने वाले ने कोई तर्का नहीं छोड़ा है तो उस के वारिसों पर तर्के के भाग के अनुसार कफ़न दफ़न का ख़र्च देना अनिवार्य है। अगर मरने वाले के वारिस न हों और इस्लामी हुकूमत हो तो उसका कफ़न दफ़न हुकूमत करेगी, इस्लामी हुकूमत ना हो तो गांव या महल्ले वालों पर मरने वाले के कफ़न दफ़न का ख़र्च वाजिब है चन्दा कर के कफ़न दफ़न करें।

अगर मरने वाले के वारिसों के अतिरिक्त कोई सवाब की नीयत या महब्बत में कफ़न दफ़न का ख़र्च बर्दाश्त करना चाहे तो अगर मरने वाले के वारिस राज़ी हों और अनुमति दें तो जाइज़ है, वारिस लोग अनुमति न दें तो जाइज़ नहीं। बीवी के कफ़न दफन का ख़र्च पहले उस के शौहर पर है, शौहर ना हो तो उसके तर्के से लिया जाए, तर्का न हो तो इस्लामी हुकूमत, वह भी न हो तो गांव महल्ले के लोग, उस की तजहीज़ व तक्फ़ीन (कफ़न दफ़न) चन्दे से करें।

प्रश्न : हमारे यहाँ कुछ लोग यूं कहते हैं कि सूर–ए–फ़ातिहा क़ुर्आन में नहीं है। यह क़ुर्आन से अलग है। क्या लोगों का ऐसा कहना सहीह है? जो लोग सूर–ए–फ़ातिहा को क़ुर्आन से अलग मानते हैं उनके मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है?

उत्तर : सूर–ए–फ़ातिहा क़ुर्आन मजीद की सूरत है, इसमें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अपने से मांगने का तरीक़ा सिखाया है जो शख़्स सूर–ए–फ़ातिहा को क़ुर्आन से अलग मानेगा वह इस्लाम से अलग समझा जाएगा। जो ऐसा समझता हो तुरन्त तौबा करे और कल्मा पढ़े।

प्रश्न : हमारे यहां से लोग हज करने गये थे, १२ ज़िल्हिज्ज की शाम को मिना से तवाफ़ेज़ियारत के लिये चले इशा के वक़्त पहुंचे, नमाज़ इशा के बाद तवाफ़े ज़ियारत शुरू की ११ बजे रात को तवाफ़े ज़ियारत और सई पूरी हो सकी। सुवाल यह है कि हाजियों का तवाफ़े ज़ियारत हुआ या नहीं?

उत्तर : अहनाफ़ के यहां तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त दस ज़िलहिज्ज की सुब्हे सादिक़ से १२ ज़िलहिज्ज को ग़ुरूब से पहले पहले है।

उसके बाद तवाफ़े ज़ियारत हो तो

जाएगा मगर मक्रूहे तहरीमी होगा दम देना पड़ेगा हज सहीह रहेगा।

दम की अदाएगी की शक्ल यह हो सकती है कि कोई जानकार मक्के जाए, या मक्के में मौजूद हो या कोई हज्ज या उम्रा करने जाए तो उसे पैसे देकर एक बक़रा हुदूदे हरम में ज़ब्ह करवाएं और वहीं के फुक़रा में तक़सीम करवाएं। यह बात भी ज्ञात रहे कि १२ ज़िलहिज्ज को अगर हाजी ने ग़ुरूब आफ़ताब के पश्चात मिना छोड़ा है तो १३ तारीख़ की रमी उस पर वाजिब है, अगर छूट गई है तो उस के बदले में भी एक दम देना पड़ेगा।

प्रश्न : अज़ान के जवाब का क्या हुक्म है? और किस तरह जवाब देना चाहिए?

उत्तर : अज़ान का पहला ज़रूरी जवाब तो यह है कि अज़ान सुनकर मस्जिद की ओर चल पड़े, सोचने की बात है कि अल्लाह की तरफ़ से मुअज़्ज़िन हय्य अलस्सलाह (आओ नमाज़ के लिये) कहे और हम जवाब न दें। दूसरा ज़रूरी जवाब यह है कि मुअज़्ज़िन जो कहे वही हम भी अपनी ज़बान से कहते जाएं अलबत्ता हय्य अलस्सलाह और हय्य अलल फ़लाह के जवाब में "ला होल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि" कहना चाहिए, और फ़ज्र की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरूम्मिनन्नौम" के जवाब में सदक्त व बरर्त कहे और चाहिए कि "अस्सलातु ख़ैरूम्मिनौम" भी कह ले। अजान के ख़त्म पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अज़ान की दुआ पढ़े। अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ़्वतित्ताम्मति वसलातिलक़ाइमति व आति मुहम्मदनिल्वसीलत वल्फज़ीलत वब्अ़स्हु मक़ाममम्महमूदनिल्लज़ी वअ़त्तहू इन्नक ला तुख़्लिफुल मीआद।

(पृष्ठ २२ का शेष)

को भी क़ादियानी प्रिय हैं बल्कि अपने देश के इस्लाम विरोधियों को भी क़ादियानी प्रिय हैं।

मिर्ज़ा का झूट कुछ छुपा नहीं है, मौलाना सनाउल्लाह से मुबाहला किया। मिर्ज़ा पहले ऊपर चले गये, मुहम्मदी बेगम को पाने के लिये नाक रगड़ डाली पा न सके, जिस के साथ मुहम्मदी बेगम का निकाह हुआ मिर्ज़ा ने भविष्य वाणी की कि शौहर ढाई वर्ष में, और लड़की का बाप तीन साल में मर जाएंगे, अल्लाह ने मिर्ज़ा का झूठ ज़ाहिर किया दोनों ज़िन्दा रहे मिर्ज़ा पहले चले गये १९०८ ई० में मिर्ज़ा कालरा रोग में लाहौर में मरे, उन का शव दज्जाल के गधे रेल पर लाद कर क़ादियान लाया गया।

अब प्रश्न यह है कि कादियानी धर्म जब खुला हुआ अधर्म है तो लोग उसे क्यों स्वीकार करते हैं? उत्तर स्पष्ट है – पहली बात तो यह कि यह धर्म से अपरिचित मुसलमानों में आर्थिक सहायता द्वारा फैलाया जा रहा है। फिर जब उन मुसलमानों से बात की जाती है तो आर्थिक लाभ तजने पर तैयार नहीं होते, कहीं मुफ्त इलाज तथा मुफ़्त शिक्षा द्वारा भी कादियानियत फैलाई जा रही है। आर्थिक लाभ पाए हुए लोग सत्य सुनने के लिये अंधे बहरे बन बैठते हैं। फिर भी जो लोग अच्छे विद्वानों से सम्पर्क करते हैं या उन की बातें सुनते हैं तो आर्थिक लाभ को लात मार कर सत्य अपना लेते हैं।

क़ादियानियों के नक़ली इस्लाम से बचाने के लिये आलिमों (इस्लामिक विद्वानों) ने अपने अपने क्षेत्र के मुसमलानों को बचाने के लिए सैकड़ों पुस्तकें लिखी हैं इस विषय पर इल्यास बर्नी की.पुस्तक "क़ादियानियत" बहुत ही पर्याप्त है, मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह० की भी उर्दू में "क़ादियानित" पढ़ने योग्य है जो अरबी और अंग्रेजी में भी है तथा हिन्दी में भी उसका संक्षेप छप चुका है। प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) है जो मुसलमान क़ादियानियत अपनाएगा वह इस्लाम से निकल जाएगा, उस की नजात न हो सकेगी अतः अपने भाइयों को क़ादियानियत से बचाने की कोशिश करना फ़र्ज़ है। वैसे हिदायत तो अल्लाह ही के इख़्तियार में है।

(पृष्ठ २४ का शेष)

ज्ञान और कला कौशल सिखाने के अतिरिक्त तीर अन्दाजी, तलवार चलाना, घोड़े की सवारी आदि की शिक्षा भी औरतें पाती थीं। उस ज़माने में संगीत को भी काफी उन्नति मिली। सुल्तान बाज बहादुर खुद इस कला का उस्ताद था और लोग उस की उस्तादी स्वीकार करते थे। हिन्दुओं को भी उस जमाने में उन्नति करने का बड़ा अवसर मिला। फौज में बहुत से राजपूत थे जो बड़े बड़े फौजी पदों पर थे। खजाने का विभाग भी हिन्दुओं के सुपुर्द था। मुल्की पदों में तो मंत्री तक वह उन्नति कर गये थे। गुजरात, खानदेश और चित्तौड़ के शासकों से बहुदा उनकी लड़ाई रहती और अफसोस है कि इस जंग आजमाई की इच्छा ने मालवा को बरबाद कर दिया। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

चन्दा भेजने वाले पुराने ग्राहक चन्दा भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।

क़ादियानियत से होशियार

मौलाना सय्यिद बिलाल हसनी नदवी
अनुवाद तथा संक्षेप : मसूब हसन

फरमाया अल्लाह के रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने कि मेरी उम्मत में तीस कज़्ज़ाब व दज्जाल ऐसे होंगे कि उनमें से हर एक कहेगा कि मैं नबी हूं लेकिन मेरे पश्चात कोई नबी न होगा। (मफहूमे हदीस)

चुनांचि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्तिम काल ही से यह सिलसिला शुरू हो गया यमन में असवद अनसी और यमामा में मुसैलिमा कज़्ज़ाब जो खिलाफ़ते अबूबक्र (रज़ि०) में मारा गया परन्तु यह सिलसिला काना दज्जाल तक जारी रहेगा इसी सिलसिले में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी का नाम भी आता है जिस को हम इस लेख में आगे मिर्जा या मिर्ज़ा गुलाम या मिर्ज़ा क़ादियानी लिखेंगे अहमद शब्द उसके साथ न लिखेंगे।

मिर्जा का जन्म १८३६ ई० कादियान (पंजाब) में एक ज़मीन्दार घर में हुआ। पढ़ाई लिखाई घर ही पर हुई बड़े हुए मनचले थे। कुछ रूपया पैसा लेकर किसी मन चले के साथ भाग निकले खूब गुलछर्रे उड़ाए मज़े लूटे सियाल कोट में कोई नौकरी भी की मुख़्तारी का इम्तिहान दिया फेल हो गये, घर आकर बाप की ज़मीन्दारी देखने लगे, साथ ही दीनी किताबों के अध्ययन में लगे, उसी बीच कुछ सूझ गई। बराहीने अहमदीया के नाम से एक किताब आरंभ की जिस में इस्लाम का समर्थन ऐसे नये ढंग से किया कि पढ़ने वाले चकित रहे गये, पचास जिल्दों में किताब पूरी करने का दअवा किया लोगों से चन्दा मांगा फिर क्या था धन बरसने लगा मिर्ज़ा ने जब देखा चाल सफल हुई तो चालों पर चालें चलने लगा, साथ ही व्रत, रात्र जाग्रण जैसे मुजाहदे भी आरंभ कर रखे थे, सूगर, मिराक़, माली ख़ोलिया जैसे रोगों ने आ घेरा, उन रोगों को वह अपना चमत्कार बताने लगा।

१८७६ से १६०५ तक किताब के केवल पांच भाग छापे और चन्दा देने वालों को लिख दिया कि पांच और पचास में एक बिन्दी ही का तो अंतर है इस प्रकार पचास पूरे हो गये। इन पांच में भी ऐसी ऐसी बातें छाप दीं कि आलिम लोगों ने मिर्ज़ा का विरोध आरंभ कर दिया। मिर्ज़ा ने अपने मामूर मिनल्लाहि (इशादिष्ट) मसीले मसीह (मसीह जैसा) और अल्लाह से बातें करने वाला आदि लिखा, इससे उलमा हज़रात समझ गये कि शीघ्र ही यह नुबुव्वत का दअवा करने वाला है।

इस बीच इस को हकीम नूरूद्दीन जैसा दुन्यादार विद्वान समर्थक मिल गया, उसी ने शैतान के बहकावे से मिर्ज़ा को नुबुव्वत के दअवे पर उकसाया। १८६० तक मिर्ज़ा ने अपने मुजद्दिद (इस्लाम को नव जीवन देने वाला) मामूर मिनल्लाह (ईशदिष्ट) तथा नबियों जैसा बताता रहा, अब मसीहे मौऊद का दअवा किया और हकीम नूरूद्दीन के परामर्शों से हदीस में मसीहे मौऊद की जो निशानी बताई गई थीं जैसे वह दमिश्क़ की मस्जिद के मीनार पर दो चादरें ओढ़े उतरेंगे आदि सब का अर्थ बदल डाला। आसमान से उतरने का इन्कार कर दिया और यह सिद्ध करने के लिये हज़रत ईसा (अ०) के आसमान पर जाने से भी इन्कार कर दिया।

१६०० ई० में नूरूद्दीन ही के एअलान पर मिर्ज़ा ने पहले मुजद्दिद मामूर मिनल्लाहि, मुलहम मिनल्लाह कह कर कुछ लोगों में अपना स्थान बना लिया था। अतः मसीहे मौऊद और महदी मान लेने पर उन लोगों को कोई आपत्ति न हुई। फिर जब अपने हथकण्डों से अपने चमत्कारों का सिक्का जिन लोगों पर जमा लिया था वह लोग उसकी झूठी नुबुव्वत के भी समर्थक हो गये इस प्रकार कुछ लोगों में उस का दीन चल पड़ा। अगर उस ने पहले ही दिन नुबुव्वत का दअवा किया होता तो इस की भी वही दशा होती जो मुसौलिमा कज़्ज़ाब की हुई।

क़ादियानियत के फलने फूलने का बड़ा सबब अंग्रेज़ों का शासन भी था। चूंकि मुसलमान विशेष कर दीनदार मुसलमान अंग्रेज़ों के लिये ख़तरा बन रहे थे, अंग्रेज़ी शासन ने देखा कि मिर्ज़ा तो मुसलमानों में फूट डालने का अचूक हथियार है। अतः पहले दिन से अब तक कादियानियों को अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त है और अब तो इसी उद्देश्य के लिये अमरीका और इस्राईल

(शेष पृष्ठ २१ पर)

तेरहवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदर्व

मालवा के बादशाह

मुहम्मद शाह बिन फिरोज शाह तुगलक के जमाने में दिलावर खां गौरी एक सरदार को मालवा का हाकिम बनाया गया। १३८८ ई० (७९० हि०) में उसने बहुत जल्द शान्ति स्थापित कर के अपनी हुकूमत मजबूत कर ली। १३९८ ई० (८०१० हि०) में दिल्ली का बादशाह महमूद तुगलक जब मालवा पहुंचा तो उसने आदर सतकार में कोई कसर बाकी नहीं रखी। १४०५ ई० (८०८ हि०) में उस का देहान्त हो गया।

बाप के बाद सुल्तान हूशिंग तख्त पर बैठा। बाप को जहर देने की सूचना सुनकर सुल्तान मुज़फ्फर गुजराती जो उस के बाप का मित्र था, लशकर लेकर मालवा आ पहुंचा लड़ाई मे हूशिग की पराजय हुई और वह बन्दी बनाकर गुजरात भेजा गया। फिर हूशिंग की प्रार्थना और शाहजादे की सुफारिश पर मालवा उस को वापस दिया गया। सुल्तान हूशिंग एक बहादुर व्यक्ति था। उसने रोब के साथ हुकूमत की। मालिक मुगीस खिलजी उस का मंत्री था। उस बादशाह की बड़ी उपलब्धि यह है कि एक छोटी मगर चुनिन्दा फौज लेकर यात्रियों के भेस में जाजनगर (उड़ीसा) पहुंच गया और जबरदस्ती राजा से ७५ हाथी छीन लिया। सुल्तान हूशिंग ने मूंड में बहुत मजबूत किला बनवाया। इसमें शान्दार मस्जिद और महल बनावाए। उसका देहान्त १४३४ ई० (८३९ ई०) में हो गया।

उसका लड़का मुहम्मद शाह तख्त का वारिस हुआ मगर अयोग्य निकला। इस कारण उसके मंत्री मलिक मुगीस के लड़के महमूद खिलजी ने १४३५ ई० (८३९ हि०) में सल्तनत ले ली। शुरू में तो सुल्तान महमूद खिलजी आन्तरिक (अन्दरूनी) बगावतों दूर करता रहा। फिर जब हूशिंग का लड़का मसऊद गुजरात के बादशाह अहमदशाह को लेकर तख्त हासिल करने के लिए मालवा पहुंचा तो कठोर युद्ध के बाद उसको असफल वापस किया। १४३९ ई० में सुलतान हूशिंग की कब्र तैयार कराई और एक मस्जिद ऐसी शान्दार बनवाई जिस की ३६० मेहराबें और २३० मीनारें थीं। इसी प्रकार जफराबाद में एक बाग लगाया जहां बड़ा गुंबद और एक महल बनवाया, फिर एक हस्पताल और एक पागल खाना बनाया और उनके खर्च के लिए चन्द गांव दिये। १४५७ ई० में मण्डलगढ़ फतह हुआ।

१४६२ ई० (८६७ हि०) में दौलताबाद फतह करने जा रहा था कि जाम्र नगर और दूसरे पड़ोसी राजाओं की तरफ से पांच सौ हाथी भेंट किये गये और उसी साल मिस्र के खलीफा अमीरूल मोमिनीन यूसुफ बिन मुहम्मद की तरफ से खिलअत और फरमान पहुंचा १४६६ ई० (८७१ हि०) में महमूद खिलजी ने आदेश दिया वि तमाम शहर में शमसी की जगह कमरी (सूर्य के स्थान पर चन्द्रमा) की तारीख लिखी जाए इस के दूसरे वर्ष बुखार के बादशाह की तरफ से खानार्ज जमालुद्दीन अस्तरा बादी दूत बन कर आए। खिलअत और पुरस्कार के साथ उनको वापस किया और हिन्दुस्तान के कुछ अनोखी सौगात बादशाह के लिए भेंट स्वरूप भेजीं। एक कसीदा (प्रशंसा पद) भी हिन्दी में लिख कर साथ कर दिया जिससे बुखारा का बादशाह बहुत खुश हुआ। ३४ वर्ष शासन करके १४६८ ई० (८७३ हि०) में उसका स्वर्गवास हो गया।

महमूद के बाद उस का लड़का ग्यासुद्दीन तख्त पर बैठा। उस ने एलान कर दिया कि वह भविष्य में विजय के बदले राज्य की रक्षा करेगा चुनानचि ३४ वर्ष के शासन में उसने जो कुछ कहा था कर दिखाया। उसके जमाने में इस कदर शान्ति रही कि उस जमाने का ख्याल करते हुए आश्चर्य होता है। वह इल्म (ज्ञान) का बड़ा कदरदान था और हर प्रकार के ज्ञान और कला को प्रचलित करने में हर समय लगा रहता था। वह अकसर महल सरा में रहता मगर सल्तनत के काम से कभी गाफिल न रहता। वह संगीत का बड़ा शौकीन था। १४९९ ई० (९०५ हि०) में उस का देहान्त हो गया।

उसके बाद उसका लड़का

सुरूद्दीन तख्त का मालिक हुआ। ह बड़ा आरामतलब था। कुछ ही वर्षों उसका स्वभाव इतना बिगड़ गया क अत्याचार पर उतर आया आखिर खार में बीमार होकर १५१० ई० (६१६ ०) में मर गया। उस के बाद उसका ड़का महमूद बादशाह हुआ और एक रदार बसंतराम को मंत्री बनाया जिसने रबारे में सरदारों को अपमानित करना रू कर दिया। इससे घबराकर लोगों उसको मार डाला लेकिन कठिनाई ह आपड़ी कि खुद आपस में लड़ने गे। खुद महमूद सन्तुष्ट था परन्तु दनी राय को मंत्री बनाकर फिर सीबत मोल ले ली। उसने तमाम पुरा सरदारों को कत्ल कर दिया जो बचे ह इधर उधर निकल गये।

मैदनी राय ने महमूद को तो जरबन्द कर दिया और खुद शासन करने लगा। उसने तमाम मुसलमानों को अपमानित किया और हर जगह उनके बदले अपने राजपूतों की नियुक्ति की। जब हर तरह से राजपूत राज्य पर पूरी तरह छा गये तो बिना शंकोच मुसलमान औरतों पर अत्याचार और मस्जिदों को खराब करने लगे। अधिकांश सज्जन लोगों और आलिमों (विद्वान) को देश से निकाला गया। खुद महमूद के पास महल में दो सौ मुसलमान रह गये। अब महमूद की आंख खुली और शिकार के बहाने बाहर निकल गया और दो सौ मुसलमानों को लेकर वापसी में राजपूतों पर टूट पड़ा उसी साल बाबन जो मैदनी राय का दाहिना हाथ था कत्ल हुआ और मैदनी राय घायल होकर घर आया और स्वस्थ होकर बला की तरह चिमट गया। मजबूर होकर सुल्तान भाग कर गुजरात पहुंचा और सुल्तान मुजफ्फर द्वितीय के साथ एक बड़ी फौज लेकर वापस आया और मांडू पर कब्जा कर लिया। मैदनी राय अपनी जागीर में चला गया। महमूद ने उसको दम न लेने दिया। तब उस ने चित्तौड़ के राना सांगा से सहायता लेकर इस प्रकार सुल्तान को पराजित किया कि खुद सुल्तान भी घायल हो कर गिरिफतार हुआ। राना सांगा ने उसको स्वस्थ होने के बाद मांड़ा वापस किया।

१५२५ ई० (६३२ हि०) में बहादुरशाह गुजराती से कुछ राजनीतिज्ञ मामले में अन बन हो गई। बहादुरशाह ने महमूद को समझाया परन्तु उसने कुछ ध्यान न दिया। बहादुरशाह सख्त गुस्सा आया। उसने माण्डू का किला फतह कर लिया और महमूद को बन्दी बनाकर चीनानीर भेज दिया और उ १५३० ई० (६३७ हि०) में कत्ल कर डाला गया। बहादुरशाह ने मालवा को अपने सरदारों के हावाला कर दिया। १५३४ ई० (६४१ हि०) में हिमायूं बादशाह ने सुल्तान बहादुर शाह से मालवा छीन लिया। हिमायूं के चले जाने पर बहादुर शाह के हुक्म से बुराहानपुर के हाकिम ने मुगलों को मालवा से निकाल दिया। और मल्लू खां, जो महमूद खिलजी के सरदारों में से था, उस को सपुर्द किया।

कुछ दिनों के बाद वह सुल्तान कादिर के नाम से मालवा का बादशाह बन बैठा। १५४२ ई० (६४६ हि०) में शेरशाह ने मालवा को फतह किया। और शुजा खां को हाकिम बनाया। उसने सारा समय मालवा के बागियों को आज्ञापालक बनाने में खर्च किया। १५५४ ई० (६६२ हि०) में अकबर ने मालवा फतह करके अपने राज्य में मिला लिया और बाज बहादुर को दो हजारी की पदवी देकर अपने सरदारों में शामिल किया।

मालवा के बादशाहों के काम :

मालवा में विभिनन लोगों ने १६० वर्ष हुकूमत की। उनमें से हूशंग गौरी और महमूद खिलजी प्रथम बड़े और भाग्यशाली बादशाह गुजरे हैं। उनकी राजधानी मण्डू (शादियाबाद) था। मण्डू का किला हिन्दुस्तान के मजबूत किलों में गिना जाता था। उसमें शान्दार मस्जिदों, ऊंचे ऊंचे महल और मकबरे बड़ी कारीगरी से तैयार किये गये। उनमें से कुछ आज भी कारीगरी के बेहतरीन नमूने मालूम होते हैं। बड़े–बड़े बाग लगाए गये, खेती को बढ़ाने की कोशिश की गई। आम फायदे के लिए एक पागल खाना भी खुलवाया गया। जहां जहां मस्जिदें बनीं वहां मोअज्जिन (अजान देने वाले), इमाम काजी और मुहतसिब (निरीक्षक) भी नियुक्त किये गये। उनके खर्च के लिऐ कई गांव वक्फ थे।

व्यापार को भी उनके जमाने में बड़ी उन्नति मिली बंगाल, कश्मीर, दकिन और दूसरे देशों से कारवां आते थे। दूसरे देशों के दूत भी दरबार में आते रहते। शाह बुखारा और खलीफा अब्बासी से भी उन के सम्बन्ध थे। महमूद मिर्जा के जमाने में बहुत से सुधार हुए। सुल्तान ग्यासुद्दीन का जमाना बड़ी शान्ति और अमन चैन का जमाना था।

उस बादशाह के जमाने में औरतों को भी हर तरह की शिक्षा दी जाती थी। चुनानचि कुर्आन पाक हिफ्ज करने (जबानी याद करने) और दूसरे

(शेष पृष्ठ २१ पर)

प्राचीन भारत की तस्वीर बाबर के कलम से

मौ०स० अबुल हसन अली नदवी

मुसलमानों ने इस मुल्क के तहजीबी सरमाए में जो कीमती इजाफा किया है उसकी अहमियत (महत्व) को समझने के लिए जरूरी है कि पहले हम हिन्दुस्तान के उस जमाने का जाएजा लें जब मुसलमान यहां नहीं आए थे और जदीद इस्लामी हिन्द की तअमीर (निर्माण) नहीं हुई थी, मुगलिया सल्तनत के संस्थापक जहीरूद्दीन बाबर ने मुसलमानों के आने के पहले इस मुल्क की जिन्दगी का नक्शा बहुत ही साफ तौर पर खींचा है जिसे देखकर अन्दाजा होगा कि मुसलमानों ने इस सरजमीन को अपने तअमीरी जौक (निर्माण रूचि) और माहिराना सलाहियतों की बदौलत कहां से कहां पहुंचा दिया, ध्यान रहे कि मुगलों की आमद से बहुत पहले हिन्दुस्तान में मुसलमानों की हुकूमत कायम हो चुकी थीं और उन्होंने तअमीर व तरक्की की कोशिशें शुरूअ (प्रारम्भ) कर दी थीं, बाबर अपनी "तूज़क" में लिखता है –

हिन्दुस्तान में अच्छे घोड़े नहीं, अच्छा गोश्त नहीं, अंगूर नहीं खरबूजह नहीं, आबे सर्द (ठण्डा पानी) नहीं, मदरसा नहीं, शमअ नहीं, मशअल नहीं शमअ दान नहीं, शमअ के बजाए डीवट होता है। यह तीन पाए का होता है, एक पाए में चराग दान के मुंह के शकल का एक लोहा, लकड़ी में जोड़ कर लगा देते हैं, एक धीमी बत्ती दूसरे पाए में लगी होती है, दाहिने हाथ में कदू की एक तोंबी होती है जिसका सूराख तंग होता है उसी की राह से तेल की पतली सी धार गिरती है, राजाओं और महाराजाओं को रात के वक्त रोशनी का कुछ काम पड़ता है तो नौकर यही कसीफ (मलीन) डीवट लेकर खड़े होते हैं।

बागों और इमारतों में आबे खां (जारी पानी) नहीं न सफाई है न मौजूनी (संतुलित) न हवा, आम (साधारण) आदमी एक लंगोटी लगाए फिरते हैं, औरते धोती बांधती हैं जिसका आधा हिस्सा कमर से लपेट लेती हैं और आधा सर पर डाल लेती हैं।

पंडित जवाहर लाल नेहरू हिन्दुस्तान की इस तस्वीर पर जो बाबर की तुजुक पेश करती है तबसिरह (टिप्पणी) करते हुए लिखते हैं –

बाबर की लिखी हुई तारीख से हमें उस तहजीबी इफलास (संस्कृतिहीनता) का पता चलता है जो उत्तरी भारत पर छाया हुवा था, इसकी वजह कुछ तो वह बरबादी थी जो तैमूर के हमले की वजह से हुई थी, और कुछ बात यह थी कि बहुत से विद्वान, आर्टिस्ट और कारीगर उत्तरी भारत छोडकर दक्षिणी भारत की ओर चले गए थे, इस गिरावट की एक वजह यह भी थी कि भारतीयों की रचनात्मक योग्यताओं के सोते सूख चुके थे।

बाबर कहता है कि इस देश में होशयार (कुशल) कारीगरों और शिल्पकारों की कमी नहीं है, लेकिन यहां के मीकानेकी आविष्कारों में कुशलता और योग्यता बिलकुल नहीं।

मेवा जात की तरक्की

हरयाली और सरसब्जी के बावजूद इस मुल्क में मेवा जात और फल बहुत कम तादाद में और कम हैसियत में होते थे, और जो कुछ पैदा होते थे वह आम तौर पर खुदरौ (अपने आप उगने वाले पेड़ थे) जिनकी ओर देश के लोग बहुत कम ध्यान देते थे, लेकिन जब मुगल इस मुल्क में आए तो उन्होंने फलों और मेवाजात को बड़ी तरक्की दी जिन की तफसील तुज़के बाबरी और तुज़के जहांगीरी से मअ़लूम की जा सकती है, मुगलों ने हिन्दुस्तानी फलों की ओर विशेष ध्यान दिया, भांति–भांति के फलों को एक दूसरे के साथ कलम करके कई तरह की अनोखी और लजीज (स्वादिष्ट) किसमें दरयाफत कीं, आम हिन्दुस्तान का मशहूर और लजीज तरीन फल है, मुगलों के आने से पहले उसकी सिर्फ एक किस्म तुखमी होती थी, लेकिन उन्होंने नाना प्रकार के आपसी मेल से कलमी आम दरयाफत किये जो निहायत लजीज और खुशरंग होते हैं, इसके नतीजे में कलमी आम की इतनी किसमें पैदा होने लगीं जिनका शुमार (गिनती) मुशकिल है।

धूप में जब भी निकलें पानी पी कर निकलें, लू में मोटे कपड़े पहनें।

मौजूदा समाज और

औरतों की आज़ादी

अबुल खैर जफर सिद्दीकी

रोमन सभ्यता ने परिवार के खिया को अपनी पुत्री, पुत्रवधु पत्नी हां तक कि पौत्रियों तक को बेचने, ोषण करने, मार देने तक के अधि कार दिये थे। यूनानी सभ्यता में स्त्री क वस्तु की तरह बाजार में बिकती ी। ग्रीस के सभ्य कहे जाने वाले माज में ११वीं से १५वीं शताब्दी तक ालियां आमतौर पर बेची जाती थीं। ति निश्चित समय के लिए पत्नी को केसी को उधार दे सकता था। एक नेयम यह था कि धार्मिक अथवा राज्य का मुखिया नयी विवाहिता स्त्री को हले अपने पास रख सकता था। इसी कार संसार के अन्य भागों में मानव ली के रूप में स्त्री का वध, सती प्रथा और नव जन्म बच्चियों को जिन्दा गाड़ देने जैसे घृणित चलन पाये जाते थे।

आज हजारों वर्ष बाद मनुष्य का दावा है कि वह बहुत सभ्य हो गया है उसने स्त्री को ऊंचा स्थान दिया है। स्त्री–पुरूष में समानता स्थापित है। आज तो पुरुष लेडीज फर्स्ट के सिद्धान्त पर चल रहा है। क्या यह सत्य है? जी नहीं, आज तो स्त्री की दशा पहले से भी बुरी है। स्त्री को जन्म लेने से पहले ही भ्रूण हत्या, के रूप में मार दिया जाता है और स्त्री भी यह जघन्य अपराध ा में शामिल हैं। लड़कियों का अपहरण कर वेश्यावृत्ति का कारोबार चलाया जाता है। दुनिया में कमाई की सबसे बड़ी इंडस्ट्री यही है।

४ सितम्बर १९९५ को बीजिंग (चीन) में एक वर्ष पूर्व मिश्र में हुए महिला सम्मेलन में समलैंगिकता, पूर्ण नग्नता और वेश्यावृत्ति बहस के मुख्य बिन्दु थे। अर्थात महिला स्वतंत्रता के नाम पर उसे वासना के भूखे शिकारियों का शिकार बनाने की योजना है। क्या यह स्त्री जाति का सम्मान है? यह सब क्यों हो रहा है? ये कौन से तत्व हैं जिन्होंने समाज को इतने निचले स्तर तक गिरा दिया है?

यह मानते हुए भी कि आज दुष्क्रम, नग्नता, चरित्रहीनता सभी अवगुण चरमसीमा पर हैं। इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि इनका प्रतिशत पूरे संसार में विस्फोटक नहीं है। आज भी सज्जनता, नैतिक मूल्य, लज्जा और मानव जीवन के सद्गुण समाज में हैं। नेकी और बदी दोनों शक्तियां सक्रिय हैं। अतः यह कहना कि सुधार का रासता बन्द हो गया है, सही नहीं होगा। आज भी पांचों उंगलियां असमान हैं, जैसे पूर्व में रही हैं और जैसे भविष्य में रहेंगी। हां इनका पारस्परिक अन्तर बदलता रहता है।

यदि संकल्प समाज सुधार हो तो पहले यह जानना जरूरी है कि प्रदूषण की चिमनियां कौन सी हैं और कहां से आती हैं? गंगा को मथते रहने से पानी शुद्ध नहीं हो जाएगा। फिर उसको मथने से पूर्व इसको दूषित करने वाली नालियों और नालों को बंद करना होगा।

वर्तमान युग में सबसे बड़ा नाला फिल्म है। पूर्व में इसमें इतिहास, नैतिक मूल्य, सुचरित्र निर्माण आदि के तत्व भी रहे हैं परन्तु वासना, नग्नता और स्वच्छन्दता भी रही है और अब तो ऐसा लगता है कि मात्र वासना, नग्नता और स्वच्छंदता के सिवा कुछ नहीं रह गया है। वह सिनेमा जो सप्ताह, पखवाड़े या महीने की बात थी उसे सोने के कमरों यहां तक कि झोपड़ियों में पहुंचा दिया गया है। चौबीस घंटे १०० चैनलों ने लोगों की नींद, आराम, काम सब छीन लिया है। धीरे–धीरे सारे चैनल फैशन टीवी, एमटीवी बनते जा रहे हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी को वासना की भावनाओं में धकेल दिया है और अब मानव का अपने ऊपर नियंत्रण कमजोर पड़ता जा रहा है। सबूत यह है कि समाज में हर पल होने वाले बलात्कार, मासूम बच्चियों से लेकर विवाहितों तक तत्पश्चात हत्याएं। धन प्राप्ति के उद्देश्यों से प्रिंट मीडिया को जो कभी साफ–सुथरी होती थी, इलेक्ट्रानिक मीडिया के रास्ते पर डाल दिया है। समाज को दूषित करने में आज मीडिया का सबसे बड़ा हाथ है।

दूसरी गन्दी नाली राजनीति है। सत्ता प्राप्ति के लिए स्त्री का उपयोग, फिर स्वयं स्त्री में सत्ता की चाह उजागर, ऐशो–इश्रत के अखाड़े का क्षेत्रफल बढ़ता ही जा रहा है। सदाचारी स्त्रियों की मौजूदगी से इन्कार नहीं। परन्तु गर्म बिस्तर भी कम नहीं। तीसरा नाला प्रगति एवं स्वतंत्रता के नाम पर, नारी सशक्तिकरण के नाम पर नारी हित के झूठे नारों द्वारा सुरक्षित, सम्मानित,

आदरणीय, ममता और करूणा की मूरत का बाजारों और सड़कों पर वासना वाली नजरों और इच्छाओं की भीड़में घसीट लाना है। यहां भी दुख यही है कि स्वयं स्त्री अपनी समझ और बुद्धि से सच्चाई को क्यों नहीं समझती? वह पुरुष के बहकावे में क्यों आ गयी है? अतः यही कहा है कि 'अब वक्त आ गया है कि महिलाओं को भी अपनी समानान्तर सोच, शक्ति एवं विकास का मार्ग बनाना चाहिए। इस समानान्तर सोच के लिए सहायता किससे, कहां से और क्यों ली जाए?

सदैव से समाज में स्त्री के स्थान, सम्मान और स्थिति के सम्बन्ध में दो विपरीत दिशाओं में धाराएं बहती रही हैं। एक वह धारा जो सृष्टि के रचयिता के वाहकों (पैगम्बरों) द्वारा प्रचलित हुई। दूसरी वह धारा जिसे ईश्वरीय निर्देशन से मुंह मोड़ कर मात्र मानव कामनाओं की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले मनुष्यों द्वारा चलायी गयी। ईश्वर के दूतों का संदेश पूरे संसार में फैला। वे पृथ्वी के कोने–कोने में स्त्री को सम्मानित, आदरणीय और बुलंद स्थान दिलाया, जबकि वासना से ओतप्रोत मनुष्यों ने इसे वेश्यावृत्ति के अपमानित व घृणित दर्जे तक पहुंचा दिया।

इस्लाम ने स्त्री को अमानवीय स्थिति से निकाल कर सम्मान की ऊंचाइयों पर पहुंचाया। स्वर्ग मां के पैरों के नीचे है। जिसने अपनी लड़कियों को अच्छी तरह से खिलाया, पिलाया और भली प्रकार से शिक्षा–दीक्षा की वह स्वर्ग पाने का अधिकारी हुआ। जो अपनी पत्नी के साथ सम्मानित व्यवहार करेगा उनके अधिकारों को भली प्रकार निभाएगा वह स्वर्ग में जाएगा। पुरुष पर स्त्री पर नजर डालेगा तो नरक का भागी बनेगा। स्त्री की लज्जा भंग करने वाले की सजा मृत्यु दण्ड है। आदि आदि।

इस्लाम की शिक्षाएं कहती हैं कि स्त्री के सम्मान को ध्यान में रखते हुए घर का पुरुष अपनी निगाहें नीचे झुका ले। मां, बहन, पुत्री, पत्नी हर रूप में स्त्री पुरुषों की सम्पत्ति में वारिस है। पुरुष अपनी पत्नी को अपने बच्चे को दूध पिलाने पर भी मजबूर नहीं कर सकता, पुरुष अपनी पत्नी को भी अपने सामने नग्नता के लिये न उभारे। घर के बाहर मेहनत व मशक्कत के काम पुरुष करे और स्त्री एक उच्च कोटि की नर्स व शिक्षिका के रूप में बच्चों का लालन–पोषण करे और घर में हल्के–फुल्के काम करे। स्त्री पर पुरुष के खर्चे की कोई जिम्मेदारी नहीं है, जबकि पुरुष स्त्री के सारे खर्चों का जिम्मेदार है। स्त्री व पुरुष दोनों समान दर्जा रखते हैं, केवल पुरुष परिवार का मुखिया है और इस प्रकार परिवार की सारी जिम्मेदारियों का बोझ पुरुष के कंधों पर रहता है।

स्त्री को भी उसके पैदा करने वाले ने उसी प्रकार सोच–समझ दी जैसे पुरुष को। स्त्री को अपने जीवन को ऊंचे स्तर पर बनाए रखने के लिए स्वयं चिन्तन करना होगा। वर्तमान युग में और खासकर पाश्चात्य संस्कृति में पुरुष संरक्षक से भक्षक बना हुआ है। स्त्री के प्रलोभन और सशक्तिकरण व स्वतंत्रता के छलावे से सावधान रहना होगा। स्त्री की महानता उसके स्त्रित्व में है। उससे कहा जाता है कि स्त्री पुरुष समान हैं। अतः तू हाव–भाव पहनावे वेशभूषा, हर प्रकार से पुरुष जैसी बन जा। तू पुरुष के लिए मात्र वासना के संतोषीकरण कासाधन है अतः अपने मान सम्मान इसी में समझ।

ईश्वर का अन्तिम सन्देश जिसे इस्लाम कहा जाता है और जिसका अर्थ है ईश्वर के प्रति पूरा समर्पण। यह मार्ग जिसके द्वारा इस पृथ्वी पर शोषण मुक्त, न्यायसंगत, सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। जानकारी इस्लाम के अध्ययन द्वारा संभव है। जरूरत है पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर स्वच्छ मन से सत्य को समझने की।

क्या आप जानते हैं?

- दुनिया का सबसे जहरीला सांप किंग कोबरा है जिसके विष की एक बूंद १६० लोगों की जान ले सकती है।
- बिल्ली अपने शरीर की ऊंचाई से ६ गुना ज्यादा ऊंचाई तक छलांग लगा सकती है।
- हमारे मरने के कुछ समय बाद तक भी हमारे सिर के बाल और नाखून बढ़ते रहते हैं।
- यदि तिलचट्टे का सिर काट दिया जाय तो भी वह ७ दिनों तक जीवित रह सकता है।
- इन्सानी खोपड़ी २२ छोटी–छोटी हड्डियों से बनी होती है।
- ऐनाकोंडा विश्व का सबसे बड़ा और वजनदार सर्प है, जिसकी लम्बाई १० से १२ मीटर तथा वजन १२० से १४० किलोग्राम तक होता है।

गर्मी से कैसे बचें

इदारा

सुहानी सुबह और ठंडी शाम की जगह अब गर्मी के झुलसा देने वाले दिनों ने ले ली है। मौसम की गर्मी और आर्द्रता (रतूबत) हमें एहतियात बरतने की सलाह देती है। जब हम सक्रिय हों तो हमें एहतियाती उपाय पर सख्ती से अमल करना चाहिए। विशेषकर बच्चे बहुत जल्द धूप और गर्मी से पहुंचने वाले नुकसान के खतरों से दोचार होते हैं। आप इस बात की कोशिश करें कि आप के बच्चे का कम से कम वक्त धूप में गुजरे। अगर बड़ा बच्चा हो तो उसे सलाह दें कि वह मुनासिब कपड़ा पहन कर बाहर धूप में निकले। और हमेशा एहतियात बरते। गर्मी से पहुंचने वाला नुकसान जान लेवा भी हो सकता है और इस के दूरगामी समस्यायें भी पैदा हो सकती हैं।

उचित मात्रा में पानी का प्रयोग भी बहुत जरूरी है। जब कोई व्यक्ति तेज गर्मी में मेहनत व मशक्कत का काम करता है तो वह प्रति घंटा आधे लीटर से अधिक पानी को खो देता है। गर्मी के दिनों में शाम की अपेक्षा सुबह में कसरत करना अच्छा है। गर्मी और तपिश के नुकसानात से बचने के लिए कुछ एहतियात तदबीरें इस प्रकार हैं–

१. नमकीन टिकियों का इस्तेमाल न करें।

२. सुबह में हर खाने के बाद और मेहनत तलब काम से पहले पर्याप्त मात्रा में पानी पियें। पानी की जरूरत तो जलवायु और काम के ऐतबार से अलग अलग होती है। कम मात्रा में थोड़े–थोड़े अन्तराल से पानी पीना एक ही समय में अधिक मात्रा में पानी पीने से बेहतर है।

३. अगर मुमकिन हो तो गर्मी के शुरूआत के दिनों में अपने काम और सक्रियता को सीमित रखें। इसके बाद धीरे–धीरे अपने काम का दायरा बढ़ाते जायें।

४. अगर आप को किसी काम से बाहर धूप में निकलना पड़े तो पहले अपने साथ खाने के लिये हलका फुलका सामान जरूर रख लें।

५. बच्चों और पालतू जानवरों को कार में न छोड़ें क्योंकि गर्मकार में चन्द मिनट रहने से भी कोई बीमारी हो सकती है।

६. अल्कोहल और मीठे शर्बत से परहेज करना चाहिए

७. ढीला और हल्के वजन और हल्के रंग वाला कपड़ा इस्तेमाल करें।

८. अगर गर्मी से कोई नुकसान पहुंचने का खतरा पैदा हो जाय तो ऐसी सूरत में अपने कार्यों में तब्दीली पैदा करना चाहिए।

गर्मी से नुकसानात उस समय पैदा होते हैं जब शरीर हद से ज्यादा गर्मी की वजह से नार्मल तापक्रम बरकरार रखने में नाकाम हो जाता है।

लू लगना : शरीर के अन्दर गर्मी से मुकाबला करने की व्यवस्था है। लगातार पसीना आने के कारण शरीर ठंडा हो जाता है मगर साथ ही शरीर का पानी समाप्त हो जाता है और इन्सान को प्यास लगती है। अगर पानी की इस कमी की तरफ ध्यान नहीं दिया गया तो शरीर को ठंडा करने की व्यवस्था नाकारा हो जाती है। लू लगने से शरीर की त्वचा (जिल्द) सूख जाती है और पसीना आना बन्द हो जाता है। नब्ज (नाड़ी) की रफ्तार तेज हो जाती है। सांसें तेज और गहरी चलती हैं। आंखें फड़कने लगती हैं और कय शुरू हो जाती है। लू लगने की सूरत में मरीज को फौरन अस्पताल ले जाना चाहिए इसका बुनियादी इलाज यह है कि शरीर का तापक्रम कम किया जाये। मरीज के कपड़े को उतार दिया जाये। और भीगे कपड़े से उसको ढाक दिया जाय। मरीज को पंखे के सामने या हवा में रखना चाहिए। सारांश यह है कि ज्यादा से ज्यादा पानी और दूसरे ड्रिंक्स (मशरूबात) का इस्तेमाल लू से बचने का बेहतरीन तरीकः है।

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

लू के ज़माने में सड़कों पर बिकने वाला गन्ने का रस पीकर तथा खुले कटे फल खाकर आप बीमार हो सकते हैं।

किस्त चार

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
इन्तिजार	प्रतीक्षा	अन्दाम	शरीर	इनआ़म	पुरस्कार
इन्तिजाम	प्रबन्ध	अन्दामे निहानी	लज्जा अंग	इनअि़दाम	मिटा देना
इन्तिज़ामिया	शासन प्रबन्धक समिति	इन्दिफाअ़	दूर करना	इनअि़ताफ़	झुकना, लौटना
इन्तिफाअ़	लाभ	इन्दिमाल	घाव भरना	इनअि़काद	आयोजन
इन्तिकाल	अंतरण, मृत्यु	अन्देशा	भय	इनअि़कास	छाया
इन्तिकाम	प्रतिकार, बदला	उन्स	प्रेम	इन्फ़िराद	अकेला होना
इन्तिहा	अंत	अन्साब	कुल (बहुबचन)	इन्फ़िरादी	वैयक्तिक
इन्तिहापसन्द	संतुलन विरोधी	इन्सान	मनुष्य	इन्फ़िरादीयत	अकेले होने का भाव
इन्तिहाई	चरम	इन्सानीयत	मानवता	इन्फ़िसाल	निर्णय करण
उन्सा	स्त्री	इन्शा	लेख लिखना	इन्फ़िआल	पश्चाताप
उनसयैन	दोनों अन्डकोश	इन्शापर्दाज	साहित्यकार	इन्फ़िकाक	पृथक करण
अनजाम	परिणाम	इनशाअल्लाहु	यदि अल्लाह ने चाहा	इन्फ़िबाज़	सिकुड़ना, आप्रय होना
अनजब	शिष्ट, दासी पुत्र	इन्शिराह़	मन का सहमत होना	इन्फ़िताअ़	विच्छेद
अनजुम	नक्षत्र, (बहुवचन)	इन्शिक़ाक़	फट जाना	इन्क़िलाब	परिवर्तन
इन्जिमाद	जमा होना	अन्सार	सहयोगी जन	इन्क़ियाद	आज्ञाकारी होना
इन्हिराफ़	विमुखता	इन्साफ़	न्याय	अंगुश्तरी	अंगूठी
इन्हिसार	निर्भरता	इन्सिराफ़	विमुखता	अनीस	मित्र,प्रिय
इन्हितात	पतन	इन्सिराम	प्रबन्ध	औबाश	लुच्चा
इन्खिला	खाली करना	इन्ज़िबात	अनुशासन	औज	उच्चता
अन्दाज़	शैली	इन्ज़िमाम	विलीनीकरण	औरंग	सिंहासन

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

हिन्दुस्तान में अख़लाकी ज़वाल, मुल्क की क़दीम रिवायतें ख़तरे में

मौलाना असरारूल हक़ क़ासमी

हिन्दुस्तान की तारीख़ का गहराई से मुतालआ (अध्ययन) करने के बाद मालूम होता है कि हमारा मुल्क क़दीम ज़माने (प्राचीन काल) से ही अपनी तहज़ीब व अख़लाक़ के लिए दुनिया भर में मशहूर रहा है। तारीख़ के मुताले से इस बात का भी पता चलता है कि हिन्दुस्तान के लोगों के बेहतरीन अखलाक़ से मुतासिर होकर बाहरी मुल्कों के बहुत से लोग लम्बे सफर तय करके यहां आते और हमेशा के लिए ठहर जाते थे। मुख़्तलिफ़ नस्लों और मजहबों के लोगों के हिन्दुस्तान आने और यही रहन–सहन इख़्तियार करने के सबब हिन्दुस्तान मुख़्तलिफ़ नस्लों मज़हबों और बोलियों का गहवारा बन गया। जिसकी मिसालें आज के गए गुज़रे दौर में भी मुल्क के अक्सर इलाकों व बस्तियों में देखी जा सकती है कि वहां मुसलमान भी आबाद है और हिन्दू भी। इसी तरह वहां ईसाई भी रहते हैं और बुद्धिस्ट भी। मुख्तलिफ़ रंग व नस्ल, मज़हबों और ख़ानदानों के बीच मेल मिलाप की यह मिसालें दूसरे मुल्कों में न कल नज़र आती थी और न आज ग्लोबलाइज़ेशन के दौर में ढूंढे से भी इस तरह की मिसालें नहीं मिलती हैं। मिसाल के तौर पर दुनिया के उन तरक्कीयाफ़्ता (विकसित) मुल्कों को ले लीजिए जो सीना ठोक कर खुद को इंसानी हुकूक के अलमबरदार कहते है, वहां दूसरे मज़हबों कौमों और मुल्कों को किन निगाहों से देखा जाता है और नस्ल व रंग की बुनियाद पर किस कदर मुनाफ़रत पाई जाती है। अमरीका में कालो और गोरों के बीच नफरत का सिलसिला अब भी जारी है। कभी–कभी रंग की बुनियाद पर पाई जाने वाली मुनाफरत इंतिहाई संगीन सूरतेहाल इख़्तियार कर लेती है और आनन–फानन कितने ही इंसान मौत के मुंह में चले जाते हैं। अफ्रीका में भी कालों और गोरों के बीच सख्त कशीदगी पाई जाती है और दोनों तबके एक दूसरे से डरे रहते है। रंग व नस्ल, मज़हब और क़ौम के बीच मेल–जोल न होने की वजह से यूरोपी व अमरीकी मुल्कों में रिहाइश का तसव्वुर अलग किस्म का है। अगर कहीं ईसाई आबाद है तो वहां दूसरे मजहबों के लोग नहीं रहते और अगर कहीं दूसरे मज़हबों के लोग हैं वहा मसीही लोग रहन–सहन इख़्तियार नहीं करते। ऐसे ही एशिया के बाशिंदों के मोहल्ले अलग हैं और वहां के अस्ल बाशिंदों की बस्तियां अलग हैं। मुल्क और बर्रेआजम (महाद्वीप) के नाम पर पाई जाने वाली इस तक़सीम पर यह असर ज़ाहिर होता है जो लोग दूसरे बर्रेआज़म, मुल्कों से आकर वहां आबाद हो जाते हैं वह पूरी ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद भी उस मुल्क में अजनबी रहते है। यहां तक कि उनकी नस्लें भी अपने आप को अजनबी महसूस करती है। यह अलग बात है कि मुस्तकिल पांच या दस साल रहने की वजह से उनको वहां की शहरियत हासिल हो जाती हो लेकिन वाकई तौर पर वह मुल्क उनके वतन जैसे नहीं बन पाते। सवाल यह है कि जब दुनिया को ग्लोबलाइजेशन की शक्ल में एक छोटे से गांव में तब्दीलकर दिया गया है तब भी मुल्कों में एशिया, यूरोप और अमरीका का तसव्वुर क्यों पाया जाता है? क्यों कालों से नफरत की जाती है? क्यों दूसरे मुल्कों से हिजरत करके आए हुए लोगों को पचास साल बाद भी अजनबी होने का एहसास होता है? जबकि हिन्दुस्तान की नौइयत इस लिहाज से बिल्कुल अलग है। जिन कौमों ने यहां जिहरत की वह यहीं की होकर रह गई और हिन्दुस्तान उनका अस्ल वतन हो गया। इसकी सबसे बुनियादी वजह यह है कि यहां के लोगों ने उन्हें कभी इस बात का एहसास न होने दिया कि वह गैर हैं या परदेशी हैं। बाहर से आने वाली कौमो ने भी यहां के समाज और तौर–तरीको की न सिर्फ इज्जत की बल्कि उन्हें किसी हद तक इख़्तियार भी किया क्योंकि यहां का रहन–सहन गैर अख्लाकी हरकतों से पाक था।

हिन्दुस्तान की कदीम रिवायतों और मेयारी अख्लाक का तकाजा तो यह है कि मुल्क की इस खुसूसियत को आज भी जिन्दा रखा जाए। सारी दुनिया में आज भी लोग हिन्दुस्तानियों के अख्लाक और इंसानी कद्रों से मुतास्सिर हों मगर अफसोस मौजूदा दौर में हिन्दुस्तान की यह खुसूसियत मिटती नजर आ रही हैं। जिस तरह दूसरे मुल्कों में जरायम की तादाद में इजाफा हो रहा है उसी तरह हमारा

मुल्क भी जरायम के ग्राफ में किसी से पीछे मालूम नहीं होता, जिस तरह दूसरे मुल्कों में इंसानी कद्रों को सरे आम रौंदा जा रहा है, उसी तरह हमारे मुल्क में भी इंसानी कद्रों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता कि मुल्क के मुख्तलिफ इलाकों में औरतों की आबरूरेजी के जिगर को चोट पहुंचाने वाले वाक्यात सामने न आते हों। कुछ दिन पहले की बात है कि नोएडा के अहम तरीन इलाके में चलती कार में एक खातून की इज्तिमाई इस्मतदरी का वाक्या सामने आया। जिसने न सिर्फ इंतिजामिया की सुस्ती की कलई खोलकर रख दी बल्कि नई नस्ल की बदलती गंदी जेहनियत की अक्कासी भी कर दी। इस तरह के कई वाक्यात दिल्ली समेत हिन्दुस्तान के कुछ शहरों में भी पेश आ चुके हैं कि इज्जत के लुटेरे चलती कारों में आबरूरेजी करते रहे। दूसरे मुल्क की एक खातून जो सिफारतखाने (एमबेसी) में काम करती थी उसकी भी कार ही में इज्तिमाई इस्मत दरी (सामूहिक रेप) का मामला भी सामने आया था। अगले दिन जब दुनिया भर के अखाबारों में यह खबर छपी तो हिन्दुस्तान की किस कदर बदनामी हुई होगी और मुल्क की इमेज कितनी दागदार हुई होगी, तसव्वुर किया जा सकता है।

आए दिन इस तरह पेश आने वाले वाक्यात के असबाब व हल पर फौरी तौर से गौर व फिक्र की जरूरत है ताकि हिन्दुस्तान की कदीम खुसूसियात का तहफ्फुज किया जा सके और नई नस्ल को बुरे हालात से बचाया जा सके। इस सिलसिले में सरकार और इंतजामिया को अहम किरदार अदा करना चाहिए। जब–जब भी जिनाकारी के वाक्यात सामने आएं उस पर खुसूसी ध्यान देकर मुजरिमों को सख्त सजा दिलवानी चाहिए। इंतज़ामिया को चाहिए कि वह हर वक्त चौकन्ना रहे और हर मुम्किन कोशिश करे कि इस तरह के वाक्यात पेश न हों। जिनाकारी व गैर अख्लाकी के बढ़ते वाक्यात के असबाब को तलाश करते वक्त हुकूमत को मुल्क के तेजी से बदलते हालात पर भी निगाह रखने की जरूरत है। जो बातें आगे चलकर गैर अख्लाकी हरकतों का मुहर्रिक बन सकती है उन पर बगैर देर किए रोक लगाने की जरूरत हैं मगर अफसोस का मकाम है कि न हुकूमत इस तरह के मामलों में संजीदा नजर आती है और न ही इंतज़ामिया। यही वजह है कि मुल्क में ऐसे क्लबों की तादाद आए दिन बढ़ती जा रही है वहां नंगेपन के इंतिहाई फहश नजारे दिखाई देते हैं। पच्छिमी मुल्कों की तरह कहीं–कहीं ऐसी तफरीहगाहें दिखाई देती है जहां गैर शादीशुदा जोड़े सैर व तफरीह और गैर अख्लाकी हरकतें करते हैं। क्या हुकूमत को इन पार्कें या तफरीहगाहों के बारे में इल्म नहीं है? जाहिर सी बात है कि हुकूमत अच्छी तरह से इन मकामात के बारे में मालूमात रखती है। लेकिन वह इस मामले में किसी तरह का रद्देअमल जाहिर नहीं करती और गैर अख्लाकी हरकतों के दायरे को मजीद फैलाने का दरपर्दा मौका फराहम करती है। अगर हुकूमत चाहती तो इन पार्कों व तफरीहगाहों को आसानी से बन्द करा देती या इन मकामात पर किसी को इस तरह की गैर अख्लाकी हरकतों का मुजाहिरा करने की इजाज़त न होती, इस के बावजूद भी अगर कोई इस तरह की हरकत करता पाया जाता तो उसके खिलाफ सख्त कदम उठाया जाता।

टीवी चैनलों पर भी हुकूमत को गहरी नजर रखने की जरूरत है। किस चैनल पर किस तरह के प्रोग्राम पेश किए जा रहे हैं हुकूमत को इस बारे में तफसीली जानकारी होनी चाहिए। जिस प्रोग्राम में गैर अख्लाकी हरकतें मौजूद हों या गैर अख्लाकी हरकतों पर उकसाने वाले मनाजिर दिखाए जाएं उन पर पाबन्दी लगाई जाए। मगर सरकार इस मामले में खामोश नजर आती है, प्रोग्राम चाहे नौजवान नस्ल के लिए अखलाकी एतबार से कितने ही नुकसानदेह क्यों न हों सरकार की तरफ से पाबन्दी नहीं लगाई जाती। ऐसा महसूस होता है कि इस सिलसिले में सरकार की पालीसी बदल रही है और सरकार के नजदीक पच्छिम की तरह नंगापन और फहाशी कोई बुरी बात मालूम नहीं होती। सरकार को अपनी इस पालीसी पर नज़रेसानी करनी चाहिए। वरना अगली कुछ दहाइयों में मुल्क के मआशरती हालात और ज्यादा खराब हो जाएंगे और गैर अख्लाकी हरकतें इतनी ज्यादा बढ़ जाएंगी कि हिन्दुस्तान की तहजीबी व समाजी पहचान ही मिट कर रह जाएगी। यह काबिले गौर बात है कि हमारे मुल्क में माद्दी (भौतिक) तरक्की के इमकानात जिस रफतार से बढ़ रहे हैं, उसी तेजी के साथ अख्लाकी व समाजी पिछड़ेपन के वाक्यात सामने आ रहे हैं। माद्दी एतबार से तरक्की और अख्लाकी एतबार से जवाल (पतन) को मुल्क के हक में किसी भी एतबार से बेहतर नहीं कहा

ना सकता।

मौजूदा जमाने में हमारे मुल्क की एक और खुसूसियत जो तेजी के साथ मुतास्सिर हो रही है वह मुख्तलिफ रंग व नस्ल, कौम व मजहब और जात व बिरादरी के बीच पाई जाने वाली हम आहंगी है। मुल्क भर में पेश आने वाले फिरकावाराना फसादात इसका ... सुबूत हैं। जिसमें अब तक लाखों जानें जा चुकी हैं। फिरकावाराना फसाद की संगीनी का अंदाजा सुप्रीम कोर्ट के उस हालिया बयान से लगाया जा सकता है। जिसमें फसादियों को दहशतगर्दों से ज्यादा खतरनाक बताया गया है। इसके अलावा इन दिनों इलाकाई मुनाफरत की भी खूब हवा चल रही है। रिपोर्टों से मालूम होता है कि एक रियासत के लोग दूसरी रियासत के लोगों को पसन्द नहीं करते। महाराष्ट्र में तो बाजाब्ता तौर से पिछले दिनों शिद्दत के साथ गैर मराठियों को रियासत से खासतौर से मुंबई शहर से बाहर निकलने की मुहिम चलाई गई थी और लोगों को जबरदस्ती शहर छोड़ने पर मजबूर भी किया गया था। जरा गौर कीजिए कि जब एक रियासत या इलाके के लोग अपने ही मुल्क के दूसरे सूबे या इलाके के लोगों को नीच निगाहों से देखेंगे और उनका इस्तकबाल करने के बजाए उनहें वहां से जिल्लत के साथ निकलने पर मजबूर करेंगे तो फिर मुल्क के हालात क्या रूख इख्तियार करेंगे और किस तरह हिन्दुस्तान की वह पहचान बरकरार रहेगी जिसकी बुनियाद पर हिन्दुस्तान को सारी दुनिया में अज़्मत की निगाहों से देखा जाता रहा है। याद रखना चाहिए कि मुल्क के क़दीम वक़ार और इसकी खुसूसियत को बचाना इंतिहाई ज़रूरी है।

इस्लाम और दहशतगर्दी (आतंक)

दहशतगर्दी (आतंक) बहुत प्रसिद्ध शब्द है इस शब्द का अर्थ इस शब्द के बोलने और पढ़ने से ही प्रकट हो जाता है। अर्थात ऐसा कार्य जिस से समाज में आतंक फैले और लोग भयभीत हों इसे पवित्र कुरआन ने (फसादुन फिलअर्ज़ि) कहा है। यह कार्य लोग छोटे मकसद (प्रयोजन) एवं बड़े मकसद दोनों के लिए करते हैं। इस कार्य को गिरोह (गुट) और तंजीम (संगठन) हुकूमतें भी करती हैं। क्योंकि वास्तव में यह शैतानी कार्य है। इस शैतानी कार्य के कारण पूरी धरती पर सब से प्रथम खून उस समय बहा जब काबील ने हाबील को केवल अपने निजी प्रयोजन के लिए मार डाला। यह दहशत गर्दी (आतंक) की पहली घटना थी जो पूरी धरती पर प्रकट हुई जिसे एक मनुष्य ने अपने निजी प्रयोजन की पूर्ति न होने की सूरत में अंजाम दिया यह व्यक्तिगत आतंक समय के साथ हुकमती आतंक में बदल जाता है। अतः इस शैतानी कार्य का क्षेत्र आलमगीर सतह (विश्वव्यापी स्तर) पर छा गया है। यह परिभाषा ११ सितम्बर २००१ को अमरीका में दो बड़ी बिलडिंगों पर नष्टकारी आकर्मण के बाद ज्यादा तर्क का विषय बनी और इसका रिशता (सम्बन्ध) इस्लाम दुश्मन अनासिर (तत्व) ने बहुत ही सुन्दरता और चालाकी से इस्लाम के साथ जोड़ दिया है—

सत्य बात तो यह है कि आतंक और इस्लाम दो प्रतिकूल वस्तुएं हैं। परन्तु वर्तमान काल का यह अलमिया है जिस धर्म ने दहशतगर्दी (आतंक) को (फसादुन फिलअर्ज़ी) से मिसाल दी हो उसी धर्म का नाता आतंक से जोड़ने की योजना की जा रही है इस पर लम्बी बहसें हो रही हैं और इसे जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास किया जा रहा है।

आज इस्लाम को दहशत पसन्द (आतंकवादी) धर्म बताया जा रहा है इस्लाम पर अतिक्रियावाद का आरोप थोपा जा रहा है पूरे देश में इस्लाम के विरूद्ध जंग छिड़ी हुई है। कभी हमारी मस्जिदों पर हमले हो रहे हैं तो कभी दीनी इदारों को दहशत व बरबरियत (उन्माद, चित्त) का निशाना बनाया जा रहा है। एक तरफ मदारिसे इस्लामिया (इस्लामी कालेजों) का आतंकवादों का अडडा बताया जा रहा है तो दूसरी तरफ कुरआन जैसी पवित्र पुस्तक में तरमीम की मांग की जा रही है। जबकि इस्लाम ने तो हमेशा भाई चारगी और आपस में प्रेम करने और एक दूसरे के दुख दर्द में शरीक होने की शिक्षा दी है। इस्लाम तो अम्न व सलामती (शान्ति एवं मंगल) का धर्म है। इस्लाम ने हमें अदल व इन्साफ (न्याय) और आपसी हमदर्दी का पाठ पढ़ाया है। इस्लाम ने तो मानवी आचार एवं आदर (अखलाक व अकदार) की रक्षा (हिफाजत) करने पर जोर दिया और खुद अल्लाह तआला ने अपनी पवित्र पुस्तक कुरआन मजीद में आतंक से रोका है ऐ लोगों तुम धरती पर फसाद न फैलाओ आज आप खुद फैसला करें कि जिस धर्म में दहशत फैलाने से रोका गया हो भला उसका सम्बन्ध आतंकवाद से कैसे हो सकता है?

औरत की आज़ादी का ढोंग

शमीम इकबाल खाँ

संसार की प्रत्येक वस्तु के रचयिता अल्लाह हैं, चांद, सूरज, जमीन, आकाश, पेड़, पौधे, जानवर, समुद्र, नग्न आंखों से दिखने वाले और न दिखने वाले प्राणी व जीव और मानव जाति सभी कुछ अल्लाह के बनाये हुए हैं और उसके आदेशों के अधीन हैं। सूरज का काम है निरन्तर रोशनी देना, चांद का काम है सूरज से प्रकाश ले कर पृथ्वी पर उसे प्रत्यावृत्त करना। पृथ्वी का काम है अपनी धुरी पर घूमना ताकि दिन व रात पैदा हो सकें। दरिया का काम है बहना, हवा का काम है चलना, बिजली का काम कड़कना, बादल का काम है बरसना आदि। जब प्रत्येक चीज के पैदा होने का कोई न कोई मकसद है, हर चीज के सुपुर्द कोई न कोई काम है तो मर्द और औरत के पैदा होने का भी कोई न कोई मकसद होगा इनके सुपुर्द कुछ काम भी होंगे।

कुरआन में औरतों को सम्बोधित करते हुए पाक परवरदिगारा का आदेश है –

"अपने घरों में स्थिरता और सुकून के साथ रहो"। (सू० अलअहजाब–३३)

इस का आशय यह नहीं है कि औरत आवश्यकता पड़ने पर घर से बाहर न जाये। इस आदेश में औरत के मूल कर्तव्य को दर्शाया गया है कि वह अपने घरों में स्थिरता और सुकून के साथ रह कर घर का प्रबन्धन करे। इस प्रबन्धन के सम्बन्ध में यदि उसे घर से बाहर निकलना पड़ता है तो उसे निकलना चाहिए। रिश्तेदारी बनाये रखना भी घर के प्रबन्धन में आता है और यह भी औरत की जिम्मेदारी का काम है।

नारी की आजादी की आवाज पश्चिमी देशों से उठी और देखते देखते सारी दुनिया में फैल गई। इसका कारण था पुरूष का स्वार्थ और उसकी लोभी मानसिकता। नारी की कम से कम जिम्मेदार उठाकर उसका अधिक से अधिक फायदा उठाना चाहता था। अपनी वास्तविक पत्नी की जिम्मेदारियों को भी बोझ समझने लगा था, इस प्रकार की मानसिकता वालों ने औरतों को बताया कि वे जो अभी तक घरों की चहार दीवारी में कैद थीं, अब वे आजाद हैं और मर्दों के कांधे से कांधा मिला कर चल सकती है और हर काम में मर्दों की बराबरी कर सकती हैं। अभी तक तुम लोगों को राजनीति और हुकूमत से दूर रखा जाता था, अब तुम्हें भी मान, सम्मान और अधिकार दिया जायेगा।

नारी जो स्वाभाविक रूप से सरल स्वभाव की होती है इन प्रोपगंडो में आ गई और अपना सुरक्षित स्थान मंदिर रूपी घर को छोड़कर असुरक्षित स्थान अर्थात् सड़कों पर आ गई और उसे पुरुष अधिकारियों की प्राइवेट सेक्रेटरी पुरुषों के स्वागत के लिये रिसेपसनिस्ट, हवाई जहाजों पर यात्रियों के मनोरंजन के लिये एयर होस्टेस, कारोबार को बढ़ावा देने के लिए 'सेल्स गर्ल' और 'माडल गर्ल' जैसे काम उसे सुपुर्द कर दिये गये। नारी का अस्तित्व ताक पर रख कर उसे अश्लील पोस्टरों में जगह मिली। माडलिंग जैसे नग्नता को कला का नाम दिया गया। पश्चिमी देशों में कितनी औरतें राष्ट्राध्यक्ष हैं, कितनी प्रधान मंत्री या मंत्री हैं? अगर इनका आंकलन किया जाये तो एक लाख में कुछ का अनुपात निकलेगा, शेष औरतों का स्थान कहां है? घर का शांतमयी वातावरण उससे छीन लिया गया और उसे होटलों के कमरे साफ करने, यात्रियों के बिस्तर की चादरें बराबर करने, स्वागत कक्ष में अपनी मुस्कुराहट से यात्रियों को आकर्षित करने, इन्हीं मुस्कुराहटों के साथ दरवाजे–दरवाजे जा कर सामान बेचना। पुरुषों ने औरत को अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये कहां से लाकर कहां पर खड़ा कर दिया।

औरत अगर अपने मां, बाप, भाई, अपने बच्चों के लिये खाना बनाये तो यह गुलामी है और होटलों में पराये मर्दों के लिये खाना परोसे तो यह उसकी स्वतंत्रता है। बच्चों का यह अधिकार है कि मां की ममता उन्हें प्राप्त हो और माओं का कर्तव्य है कि अपनी ममता उन्हें दें, लेकिन होता क्या है? अपने फूल जैसे बच्चों को नौकरों को सुपुर्द करके, या नर्सरी में डाल कर दूसरे के बच्चों की देख–भाल के लिऐ उन्हें मजबूर कर दिया गया। अपने बच्चों

को अच्छे सस्कार न दे पाने के कारण बच्चे बिगड़ जाते है और अपराधी तक बन जाते हैं, अपने पति और बच्चों के लिए उस के पास समय नहीं है, परन्तु अपने अधिकारी और उसकी पत्नी और बच्चो के बेगार के लिये हर समय लगी रहती हैं। क्या यही नारी की आजादी है?

आठ घंटे की जान तोड़ मेहनत के बाद जब स्त्री घर लौटती है तो घर के काम भी उसके इन्तिजार में पड़े रहते हैं। वह अपनी घरेलू जिम्मेदारियों से अलग नहीं हुई है, घर के सारे काम वह स्वयं करती है लेकिन कितनी थकन और पीड़ा के साथ।

पुरुष प्रधान समाज औरतों को घर से बाहर निकालने के लिये यह खोखली बात करता है कि राष्ट्र के निर्माण में आधी जनसंख्या को अपाहिज बना कर नहीं रखा जा सकता। यह बात इतने भरोसे से कही जाती है मानो लगता है सारे पुरुष देश की उन्नति में लगे हुए हैं और कोई बेरोजगार नहीं है। इसलिए देश की तरक्की की राह में जनशक्ति बढ़ाने हेतु स्त्रियों की सेवाएं आवश्यक हो रही हैं।

हम यदि अपने देश में देखें तो पता चलता है कि रोजगार सम्बन्धी कितनी अव्यवस्था है। योग्य और शिक्षित व्यक्ति रोजगार की तलाश में जूतियां घिस रहे हैं, चतुर्थ श्रेणी की नौकरी के लिये सैकड़ों स्नातक के प्रार्थना पत्र आ जाते हैं। तृतीय श्रेणी की नौकरी के लिए स्नातकोत्तर के प्रार्थना पत्रों की भी भरमार होती है। होना तो यह चाहिए कि देश की तरक्की के लिए सबसे पहले सभी पुरूषों की असामियां भरी जाएं तत्पश्चात् स्त्रियों के बारे में सोचें उस समय तक उन्हें घर रूपी मन्दिर से अलग न करें। उन्हें घर की लक्ष्मी बना रहने दें और अपने बच्चों के चरित्र निर्माण में लगी रहने दें जो उनकी जिम्मेदारी है और बच्चों का अधिकार है। मां को अपने जिम्मेदारी से विचलित न करें और न बच्चों से उनका अधिकार छीनें। यदि औरत को उनके लिए सही स्थान पर वापस ले आया जाये तो बहुत सी समस्यायें दूर हो जायेंगी। सब से बड़ी बेरोजगारी की समस्या दूर होगी। हर घर में रोजगार हो जायेगा।

इस समय की स्थिति इस प्रकार है कि एक घर में पति पत्नी दोनों रोजगार से लगे हुए हैं और एक घर में पति पत्नी दोनों बेकार हैं। वह समयाभाव के कारण अपने बच्चों को पैसे के अलावा कुछ नहीं दे पा रहे हैं। सुब्ह हुई किसी तरह से बच्चों को स्कूल के लिये लादा, जल्दी उल्टा सीधा खाना बनाया और अपने अपने कार्यालयों के लिए रवाना हो गये। घर में ताला और बच्चे स्कूल में, क्या यही फैमिली सिस्टम है? फैमिली सिस्टम तो नष्ट हो कर रह गया है। बच्चे स्कूल से वापसी पर नौकरों की सोहबत में उनकी आदतें अपनाते हैं। मां को तो फुर्सत नहीं है जबकि मां कीही बच्चो की पहली पाठशाला होती है, मां के ही कदमों में बच्चों की जन्नत है, जिनसे बच्चे महरूम रहते हैं।

जो माता पिता बेरोजगार है, अपने बच्चों को पैसे के अभाव के कारण शिक्षा दीक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं कर पाते और न ही अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति। क्या इस व्यवस्था को ठीक कहा जा सकता है? व्यवस्था तो उस समय ठीक होगी जब पहले धर की स्त्री का रोजगार दूसरे घर के पुरुष के पास हो। इस व्यवस्था से दोनों घरों में रोजगार होता, दोनों घरों में बच्चों पर मां की ममता का साया होता जो उन्हें विचलित होने से, बुरी संगत में पड़ने से रोकता और बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक होता। वे अच्छे नागरिक बनते और देश की उन्नति के रास्ते खुलते।

सोवियत यूनियन में अन्तिम राष्ट्राध्यक्ष मीखाइल ग्रोवाचोफ ने एक किताब प्रोस्ट्रइका लिखी है जो प्रकाशित हुई और उसे प्रसिद्धि भी मिली। इसी किताब में औरतों के सम्बन्ध में 'स्टेटस आफ ओमेन नाम के एक अध्याय में उन्होंने लिखा है –

"हमारी पश्चिमी सोसाइटी में औरत को घर से बाहर निकाला गया और उसे घर से निकालने के नतीजे में बेशक हमने कुछ आर्थिक लाभ प्राप्त किये और पैदावार में कुछ बढ़ोत्तरी हुई इसलिये कि मर्द भी काम कर रहे हैं और औरतें भी काम कर रही है परन्तु पैदावार अधिक होने के उपरान्त भी परिणाम यह प्राप्त हुआ कि हमारा फैमली सिस्टम तबाह हो गया और इस फैमिली सिस्टम के तबाह होने के कारण हमें जो हानि उठानी पड़ी हैं वह हानि उस लाभ से अधिक हैं जो पैदावार की बढ़ोत्तरी के परिणाम स्वरूप हमें प्राप्त हुए हैं। अतः मैं अपने देश में "प्रोस्ट्राइका" के नाम से एक आन्दोलन आरम्भ करने जा रहा हूं इस में हमारा एक मूल उद्देश्य यह है कि वह औरत जो घर से निकल चुकी है, उसको वापस घर में कैसे लाया जाये? इसके तरीके सोचने पड़ेंगे अन्यथा जिस प्रकार हमारा फैमिली सिस्टम तबाह हो चुका

है उसी तरह हमारी पूरी कौम तबाह हो जायेगी।''

वास्तव में मानवी जीवन दो भागों में बंटा हुआ है। एक घर के अन्दर का विभाग और दूसरा घर के बाहर का विभाग। यह दोनों विभाग ऐसे हैं कि इन को साथ लिये बिना संतुलित पारिवारिक जीवन नहीं गुजारा जा सकता। घर का प्रबन्धन भी आवश्यक है और घर के बाहर अर्थात् रोजी रोटी कमाने का प्रबन्धन भी आवश्यक है। जब दोनों अपनी–अपनी जगह ठीक–ठीक चलेंगे तब मनुष्य का जीवन सार्थक होगा अन्यथा यदि इन में से एक विभाग खत्म हो गया अथवा कमजोर पड़ गया तो मानवीय जीवन का संतुलन समाप्त हो जायेगा।

इन रिश्तों को बिगाड़ने और टूटने के बड़े मुनासिब और ठोस कारण भी होते हैं। मर्द के दिल में औरत के प्रति आकर्षण होता है। इसी प्रकार औरत के दिल में भी मर्द के प्रति आकर्षण होता है। यह बात कुदरती होती है इसे झुठलाया नहीं जा सकता। जब इन दोनों के मध्य स्वतंत्रता के साथ मेल जोल होगा, आजादी के साथ उठना बैठना होगा, बातें होगी, हंसी मजाक होगा उस समय वह आकर्षण रंग लायेगा जो कुदरती तौर पर उसमें मौजूद है वही गुनाह पर आमादा कर देगा और यही रिश्तों के बिगड़ने का कारण भी बन जायेगा।

पश्चिमी देशों में देखें, कोई भी भी मर्द या औरत अनुचित ढंग से अपनी काम वासना पूरी करना चाहे तो बड़ी आसानी से पूरी कर सकता है, कोई रोक टोक नहीं है, न कानूनी और न समाजी। इसके बावजूद भी बलात्कार के अपराध यहां संसार भर से अधिक हो रहे हैं। इसका मात्र कारण आजादी के साथ औरत व मर्द का मिलना जुलना है।

मिसेज हडसन का विचार है– 'हमारी सभ्यता की दीवारें गिरने के करीब हैं, इनकी बुन्याद कमजोर हो गई हैं और इसकी शहतीरें हिल रही हैं, न मालूम सारी इमारत कब धराशायी हो जाये? हम पिछले कई सालों से देख रहे हैं कि यह लोग कानून व्यवस्था की पाबन्दियां बरदाश्त करने के लिये आमादा नहीं हैं। इसकी सलामती की बस एक ही सूरत बाकी है कि स्त्री और पुरूषों की आजादी के साथ मेल जोल पर पाबन्दी लगाई जाये।'

"औरत, मर्दों से किसी भी प्रकार कम नहीं होती है, जो काम मर्द कर सकता है वह काम औरत भी कर सकती है, तो क्यों औरत को घर में बन्द कर के रखा जा रहा है?'' यह मात्र खोखला नारा है जो "वोट'' और "नोट'' के लिये लगाये जाते हैं। वास्तविकता इसके विपरीत है। शारीरिक शक्ति में औरत की तुला में मर्द काफी बलवान होता है जो घर के बाहर काम करने के अनुरूप होता है। बाहर के कार्य शक्ति और परिश्रम के बगैर पूरे नहीं किये जा सकते। औरत कोमल होती है, नाजुक होती है मर्दों की अपेक्षा इसकी शारीरिक शक्ति बहुत कम होती है इसलिये यह बाहर के थका देने वाले कामों के लिये कदापि उपयुक्त नहीं है, इसकी शारीरिक रचना और शक्ति धरेलू काम के लिये ही उपयुक्त है।

औरत को शिक्षित अवश्य होना चाहिए। यह शिक्षा धनार्जन के लिये न होनी चाहिए, धनार्जन का कार्य तो पुरुषों का है। उसकी शिक्षा इस उद्देश्य से होनी चाहिए कि वह अपनी जिम्मेदारियों को पहचान सके, अपने बच्चों का अच्छी तरह पालन पोषण कर सके, उन्हें अच्छे संस्कार दे सके ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें। राष्ट्र निर्माण में यह सब से बड़ा योगदान होगा। पति पत्नी दोनों कमा रहे हैं, घर में एक या दो बच्चे हैं, उनकी हर प्रकार की इच्छायें पूरी की जा रही हैं, कोई नियंत्रण नहीं परिणाम स्वरूप बच्चे बिगड़ रहे हैं।

देश की प्रगति के हाथ बटाने के लिये घर से निकली मां अपने बच्चो की चिन्ता से अलग नहीं हो पाती, दिल व दिमाग वहीं रहता है जहां बच्चे होते हैं : बच्चे अब स्कूल में होंगे, अब छुट्टी होने वाली होगी, अब छुट्टी हो गई होगी, अब बच्चे घर जा रहे होंगे, अब कपड़े बदल रहे होंगे, पता नहीं क्या खाया हो? सब्जी रोटी बना कर रख आई थी .... आदि एक तरफ तो वास्तविक जिम्मेदारियां जो उसके स्वभाव से जुड़ी हुई है, उसका पीछा नहीं छोड़ रही है और दूसरी ओर रोजगार की शकल में थोपी गई जिम्मेदारियां, औरत की यह स्थिति बड़ी ही दयनीय होती है। उसे मानसिक तनाव में रखा जा रहा है और यह तनाव परिवार में और बच्चों में भी बटता है जिसके परिणाम बड़े ही दुखदायी हो सकते हैं।

पुरुष प्रधान समाज को इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या पत्नी के धन कमवाये बिना उसकी आय से परिवार सब्जी रोटी नहीं खा सकता? अगर नहीं तो फिर उससे नौकरी करवायें परन्तु इस बात का अवश्य आंकलन कर लें कि उसकी नौकरी से जो लाभ हो रहा है, इससे उन्हें होने वाले नुकसानात में क्या अनुपात है या आगे चल कर क्या हालात पैदा हो सकते हैं?

वेद व्यास ने भी इसी प्रकार का विचार दिया है –

नारी को घर की लक्ष्मी कहा गया है, यह भाग्यवान, आदरणीय, पवित्र और घर की शोभा है अतः इनकी विशेष रूप से सुरक्षा की जानी चाहिए।

फलों का बेताज बादशाह सेब

डाक्टर शफीक आजमी
अनुवाद : अब्दुर्रहीम सिद्दीकी

ख़ुदा ने हमारे लिये अनगिनत सुख सामग्रियां उत्पन्न की हैं, उन्हीं में से एक प्रसाद सेब भी है उसका महत्व कई प्रकार से सिद्ध है। यह आहार तथा विटामिन से भरपूर एवं कई प्रकार के शारीरिक अंगों की शक्ति पहुंचाने वाला अच्छा स्वादिष्ट फल भी है तथा शरीर के अनेक प्रकार के रोगों के लिए संतोषप्रद दवा भी, सेब स्थायी रूप से कुछ दिनों तक प्रयोग किया जाय तो हम शरीर पर कई प्रकार के लाभों को देख सकते हैं। सेब के प्रयोग से हृदय एवं मस्तिष्क को शक्ति प्राप्त होती है तथा चेहरा कन्धार के सेब की तरह से लाल हो जाता है अगर आप अपने स्वास्थ को ईर्ष्या योग्य बनाना चाहते हैं तो दो या तीन अच्छे प्रकार के मीठे सेब प्रतिदिन निहार मुंह खायें तथा ऊपर से एक पाव दूध पी लें, सेब में विटामिन्स के अतिरिक्त प्रोटीन, शकर एवं फासफोरस की मात्रा भी अधिक पायी जाती है जो हमारे शरीर के पालन पोषण में बड़ा रोल अदा करते हैं। सेब आहार के साथ–साथ चिकित्सा भी है। जैसे खाली पेट अर्थात भोजन करने से पहले सेब खाने से भूक अधिक बढ़ जाती है तथा सोते समय एवं निहारमुंह खाने से कोष्ठ बद्धता (कब्ज) भी समाप्त हो जाता है।

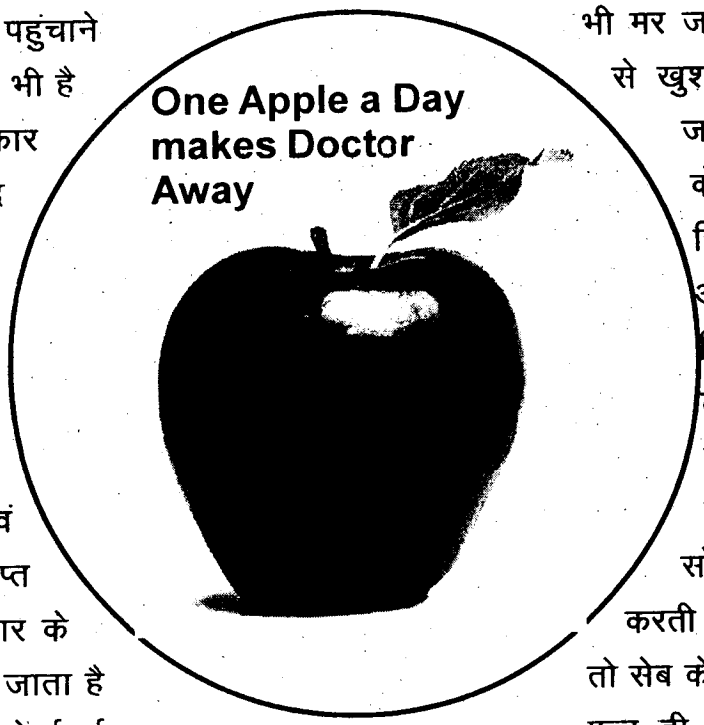

अतः जो व्यक्ति भूक की कमी के शिकार हैं, वह ऊपर बतायी गयी विधि से सेब का प्रयोग करके अपने पेट के रोगों को खत्म कर सकते हैं। आमाशय एवं यकृत (जिगर) की कमज़ोरी के लिए सेब बहुत ही लाभदायक है। मस्तिष्कीय श्रमिकों के लिए तो बहुत ही लाभदायक है। मस्तिष्क एवं हृदय की कमज़ोरी के लिये अति उत्तम है, सेब के प्रयोग से पेट के कीड़े भी मर जाते हैं। सेब के छिलकों से खुशबूदार चाये भी बनायी जा सकती है जो स्वास्थ के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होती है तथा वृद्धा अवस्था के व्यक्तियों के लिए यह चाये बहुत ही लाभयादक होती है, इस चाये में अगर शहद मिला दिया जाय तो यह चाये सोने पर सुहागा का कार्य करती है। इस प्रकार देखा जाय तो सेब केवल एक अच्छा स्वादिष्ट फल ही नहीं बल्कि हमारे लिए एक बहुमूल्य उपहार है अतः अगर हम इसे फलों का बिना मुकुट का राजा कहें तो ग़लत न होगा।

बनावटी दूध की चाय न पियें। लीमू की चाय पियें।

मजेदार फल आम

मु० गुफरान नदवी

आम हमारे देश के मन पसन्द और मजेदार फलों में से एक फल है जिसे देख कर हम न सिर्फ खुशी महसूस करते हैं बल्कि उसके इस्तेमाल से अपनी कुवत व तवानाई में अच्छी तरह इजाफा भी करते हैं, इसका दिलकश और खुशनुमा रंग जिस तरह हमारे दिल व दिमाग पर छाया रहता है उसी तरह यह अपने खुश जाइका और कुदरती मिठास और शीरीनी से हमारे जिस्म, दिल व दिमाग को भी तरोताजा बनाए रखता है, इसी बिना पर इसकी इफादियत और अहमियत को नजर अन्दाज (अनदेखा) नहीं किया जा सकता आमतौर पर आम दो तरह के होते हैं, तुख़मी और क़लमी कच्चे और अध कच्चे आम खटटे होते हैं मगर जो आम अच्छी तरह से पक जाते है वह लज़्ज़त में मीठे और खुश ज़ाइका होते हैं, अगर कुछ आम ऐसे भी होते हैं जिनके अन्दर दोनों लज़्ज़तें पाई जाती हैं यानी तुर्शी (खट्टापन) और मीठा पन, तुख़मी आम जब पक जाता है तो उसके रस को चूसा जाता है और कलमी आम जब पक जाता है तो उसे चाकू वगैरह से तराश कर खाया जाता है, तुख़मी आम के मुक़ाबले में क़लमी आम थोड़ा, देर से हज़्म होता है। लेकिन यह दोनों क़िस्म के पके हुए आम चाहे वह क़लमी हों या तुख़मी इनसान के जिस्म को ताक़त पहुंचाने में यकसां (समान) होते हैं और शरीर की उन्नति और विकास में मदद करते हैं इसके साथ साथ क़ब्ज़ भी दूर करते हैं, इसके बराबर इस्तेमाल से इन्सान मोटा और ताक़तवर हो जाता है, गोश्त पोस्त और खून वगैरह काफ़ी मिक़दार (संख्या) में हो जाते हैं। विटामिन के माहिरीन (विशेषज्ञ) का कहना है कि आम के अन्दर विटामिन सी काफ़ी मात्रा में पाया जाता है और थोड़ी मात्रा विटामिन "ए" की भी होती है, इन दोनों कुदरती (प्राकृतिक) विटामिन के संगम से एक नई फुर्ती पैदा होती है जो इनसान के लिये फ़ाइदेमन्द होती है, इन विटामिन का प्रभाव अधिकतर शरीर और उस के अंगों की उन्नति और विकास पर पड़ता है और इन्सानी शरीर और चेहरे पर हुस्न और निखार आता है। और जिल्द की रंगत में खुदादाद इज़ाफ़ा भी होता है, बच्चों की परवरिश (पालन पोषण) और उनकी नशोनुमा (बढ़ोतरी) के लिये आम के इस्तेमाल को हकीमों ने काफ़ी मुफ़ीद बताया और बच्चों के लिये अंकसीरे आज़म (कीमिया) करार दिया है, आम को सुबह सवेरे नहीं खाना चाहिए क्योंकि उनका नहार मुंह खाना नुकसान देह होता है, हमेशा कुछ न कुछ खाने के बाद ही उसे खाना चाहिए, यूं तो उसके खाने का कोई खास वक़्त मुक़र्रर नहीं होता ताहम दोपहर के वक़्त उसके लिये अच्छा माना गया है, अगर आम खाने के बाद थोड़ा दूध पी लिया जाये तो यह और भी फ़ाइदेमन्द होता हे। आम थोड़ी देर में हज़्म हो जाता है अगर उसके खाने के बाद जामुन के चन्द दाने खा लिये जायें तो बहुत जल्द हज़्म हो जाता है।

लू के दिनों में आम का इस्तेमाल कुछ ज़ियादा ही होने लगता है क्योंकि उसका इस्तेमाल लू से भी बचाता है लू से बचने के लिये आम के रस का शरबत काफ़ी कारामद होता है, लू लग जाने पर अगर कच्चे आम को पीसकर जिस्म (शरीर) पर लगाया जाए तो लू के असर को जल्द खत्म कर देता है। जिस तरह आम फाइदेमन्द होता है उसी तरह उसकी गुठली भी कारामाद और फाइदेमन्द होती है। आम की गुठली का गूदा काबिज होता है, नई गुठली के मुकाबले में पुरानी गुठली का गूदा कुछ जियादा ही काबिज़ होता है, दस्तवाले मरीज़ को अगर पुरानी गुठली के गूदे को पीसकर खिलाया जाए तो दस्त आना बन्द हो जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि आम कुदरत के उनअतीयात (अनूदानों) में से एक अतीयह (अनुदान) है जो उसने विशेष रूप से इन्सानों को प्रदान किया है, हमें कुदरत के इस अन्मोल तोहफे से फ़ाईदा उठाने की कोशिश करना चाहिए।

रब का आदेश

इदारा

रब ने अपने प्रिय तथा अन्तिम नबी को आदेश दिया कि 'आप ईमान वालों से कह दीजिए कि वह अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों (लज्जा अंगों) की हिफाज़त (रक्षा) किया करें, यह दोनों कार्य उन के लिये बड़ी पवित्रता के कार्य हैं। निःसन्देह जो कार्य भी लोग किया करते हैं अल्लाह उन सब से सूचित है। और (ऐ नबी) आप मोमिन औरतों से भी कह दीजिए कि वह अपनी निगहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और बनाव सिंगार लोगों को न दिखाएं सिवाए उसके जो साधारणतया खुला रहता है, और अपनी ओढ़नियां अपने सीनों पर डाल लिया करें और अपना बनाव सिंगार किसी को न दिखाएं, मगर हां अपने अपने शौहरों (पतियों) को, या अपने अपने बापों को या शौहर के बापों (ससुरों) को या अपने बेटों को, या अपने शौहर के बेटों (सौतेले बेटों) को, या अपने भाइयों को, या भाइयों के बेटों को या अपनी बहनों के बेटों को, या अपनी हम मज़हब औरतों को या अपनी लौन्डियों को या ऐसे सेवक मर्दों को जिन को औरतों की ख्वाहिश न हो (चाहे बुढ़ापे के सबब या बेवकूफी (मूर्खता) के सबब) या ऐसे बच्चे को जो अभी औरतों की पोशीदा (गुप्त) बातों से वाकिफ (अवगत) नहीं है (इन सब) को अपना बनाव सिंगार दिखा सकती हैं। (अर्थात) इन से परदा नहीं है, औरतों से यह भी कहिये कि वह चलने में पांव ज़ोर से न रखें कि उनका (ज़ेवर का) छुपा बनाव सिंगार पहचाना जाए। और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह की जनाब में तौबा करो ताकि कामयाबी (सफलता) पाओ। (सूर–ए–नूर : ३०, ३१)

दोनों आयतों में जो निगाह नीची रखने को कहा गया है तो यह आम (व्यापक) है हर उस चीज़ के लिये जिस का देखना नाजाइज़ है लेकिन यहां मर्दों को औरतों के देखने और औरतों को मर्दों को देखने की बात विशेष है कि एक दूसरे से निगाह नीची रखें।

निगाह नीची रखने में सामने की चीज का इल्म (ज्ञान) तो रहता है, पर पहचान नहीं रहती।

शर्मगाहों की हिफ़ाज़त में उन का छुपाना भी है और उन को बुराइयों से बचाना भी। ३१वीं आयत में महरमों का बयान आया है जिसका विस्तार आएगा, पस किसी की निगाह किसी ना महरम औरत पर पड़ जाए तो वह फ़ौरन हटा ले। सहीह मुस्लिम में जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली से रिवायत है कि उन्होंने नबी (सल्ल०) से किसी औरत पर अचानक नज़र पड़ जाने के विषय में पूछा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुरन्त निगाह फेर लो। और सुनने अबी दाऊद में अब्दुल्लाह बिन बुरैदा अपने वालिद साहिब से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अली से फ़रमाया कि (किसी औरत पर निगाह पड़ जाए तो तुरन्त हटा लो) पहली निगाह पर दूसरी मत डालो कि पहली निगाह तुम्हारी है दूसरी तुम्हारी नहीं है। अर्थात पहली निगाह तुम को मुआफ़ कर दी जाएगी दूसरी मुआफ़ न होगी।

लोग ध्यान दें क्या जवानों की मख़्लूत तअ़लीम (सह शिक्षा) में इन बातों का लिहाज़ होता है ?

३१वीं आयत में जिन ज़ीनतों (सिंगारों) के ज़ाहिर हो जाने पर छूट है उन में मत भेद हुआ है बअ़ज़ हदीसों से चेहरा और दोनों हथेलियों का खोलना साबित होता है, हनफ़ी उलमा ने दोनों क़दमों को भी लिया है। लेकिन यहां ग़लत फ़हमी न होना चाहिए दोनों को निगाहें नीची रखने का आदेश मिल चुका है। चेहरा खोलना ज़रूरत पर निगाह नीची रखने के साथ जाइज़ हो सकता है न कि निगाहें लड़ाने और हुस्न से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिए। सुन्दरता से आनन्द लेने के उद्देश्य से चेहरा खोलना कदापि जाइज़ नहीं।

अतएव अधिकतर विशेषज्ञ मुस्लिम विद्वानों ने स्त्रियों को अपरिचितजनों के सामने मुखड़ा खोलने की अनुमति नहीं दी। सऊदीया के एक सफ़र में रियाज़ एयर पोर्ट पर मेरी पत्नी मेरे साथ थीं, उन्होंने चेहरा खोलना ज़रूरी न समझा न खोला पोसपोर्ट की चेकिंग के वक़्त उन को एक बन्द कमरे में एक औरत के पास चेक कराया गया, दूसरी औरतों ने यहां चेहरा खोलने की ज़रूरत समझी चेहरा खोल दिया मर्दों ने चेक कर के पास कर दिया, परन्तु यह प्रीति तथा प्रेम की सच्ची कहानियां जो साहित्य तथा समाज में

प्रसिद्ध एवं प्रचलित हैं और यह आत्म हत्याओं की सूचनाएं जो रोज़ अख़बारों में छपती हैं इन सब का सम्बन्ध मुखड़ा देखने से ही है।

३१वीं आयत में औरतों को जिन लोगों पर अपनी ज़ीनत (सिंगार) ज़ाहिर करने की इजाज़त दी गई है अर्थात जिन से परदा नहीं है उन में सबसे पहले शौहर (पति) है जिससे किसी अंग का परदा नहीं। फिर महरम लोग हैं। महरम अरबी शब्द है अर्थ है हराम अर्थात ऐसा क़रीबी जिस से सदैव निकाह हराम (वर्जित) हो। आयत में वह इस प्रकार गिनाए गए हैं –

१. बाप (ऊपर तक दादा परदादा आदि) २. ससुर ३. बेटे (नीचे पोते पर पोते आदि) ४. पति के बेटे (सौतेले बेटे) ५. भाई ६. भाई के बेटे, ७. बहन के बेटे, ८. मामू, ९. चचा (८,९ का जिक्र इस आयत में नहीं है हदीस से साबित है) इन सब से परदा न होने का मतलब है कि इन के सामने औरत आ सकती है बात चीत कर सकती है, इन का जिस्म छू सकती है, इनसे अकेले में मिल सकती है यह इतने क़रीबी हैं कि इन से व्यभिचार की कल्पना भी नहीं की जा सकती, इन से भी लज्जा अंग छुपाए जाएंगे, परन्तु इन में भी जो शराबी, ज़ानी हों सहीह यह है कि उन से भी परदा किया जाए, आज कल अख़्बारों में महरमों के साथ बुरे कामों की ख़बरें रोंगटे खड़े कर देने वाली हैं।

आयत में ग़ैर औरतों से भी परदे का आदेश है वास्तव में वह जब बे तकल्लुफ़ ग़ैर मर्दों से मिलती है तो तुम्हारी सुन्दरता का वर्णन उन से ज़रूर करेगी अतः बे ज़रूरत उन के सामने भी न आओ।

आयत में ऐसे ख़ादिमों (सेवकों) से भी परदा नहीं जिन को अपनी मूर्खता या बुढ़ापे के कारण औरतों की इच्छा ही नही, न उन बच्चों से पर्दा है जिन को स्त्रियों की गुप्त बातों का ज्ञान नहीं। जो स्त्रियां ज़ेवर पहनती हैं उन को आदेश है कि धीरे पांव रखें ताकि अपरिचित मर्दों का ध्यान उन की ओर आकर्षित न हो।

इन आदेशों के पालन करने में अक्सर भूल चूक हो ही जाती है। अतः आदेश हुआ कि ऐ ईमान वालो अल्लाह से तौबा करते रहो ताकि काम्याब (सफल) हो नजात हो जाए, दन्डित न हो। पर्दे के विषय में मैंने दो महत्वपूर्ण आयतों और बअ़ज़ हदीसें प्रस्तुत कर दीं, अभी इस विषय पर कई आयतें और हदीसें मौजूद हैं।

जवान लड़कों तथा लड़कियों की सह शिक्षा के विषय में इसी प्रकार आफिसों में मिले जुले कर्मचारियों के विषय में मेरी जानकारियों का माध्यम सिकन्ड हैण्ड है, परन्तु मीडिया से जो कुछ ज्ञात होता रहता है वह दिल हिला देने वाला है। यहां मैं मिश्र के सय्यिद मुहम्मद क़ुत्ब की एक बात नक़्ल करना चाहूंगा वह अमरीका में एक गोष्ठी में भाषण दे रहे थे और लड़कियों तथा लड़कों के अनुचित सम्बन्ध की बुराइयां बयान कर रहे थे कि लड़कियों की ओर से परचा आया कि सर आप हमें इस्लामी विश्वासों तथा उपासनाओं के विषय में बताएं। रही बात यौन इच्छाओं की पूर्ति की कब और कैसे? तो यह बियालोजी का विषय है इसे हम आप से अधिक जानते हैं। हद हो गई ना?

यह बात मैं ने सय्यिद क़ुत्ब के एक भाषण में खुद उन के मुख से सुनी।

धन्य हैं हमारी वह बेटियां जो सह शिक्षा में भी शरीअ़त की पाबन्द हैं और धन्य हैं हमारी वह बहन बेटियां जो मख़लूत (मर्दों औरतों से मिले जुले) आफ़िसों में शरीअ़त की पाबन्दी के साथ काम कर रही है।

सन् १९८२ ई० में मुझ से रियाज़ में पूछा गया था कि औरत शरीअ़त की पाबन्दी के साथ कैसे तरक़्क़ी कर सकती है? मैंने जो नक़्शा प्रस्तुत किया बहुत पसन्द किया गया था परन्तु अब तो वहां भी अमरीका एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहा है कि वही औरत तरक़्क़ी करे जो इस्लामी आदर्शों को ख़ैर बाद कह दे। इस विषय पर हम अपनी बहन बेटियों के लेखों की प्रतीक्षा करेंगे।

औरत

औरत वो है छुपी रहे जो
उस को ना दिखलाओ तुम
घर का वो प्रबन्ध करेगी
महफ़िल में मत लाओ तुम
हर नर बाहर काम करे और
नारी घर बैठाओ तुम
नर की हो मज़दूरी क्यों कम
ये तो हमें बताओ तुम
नारी तो है घर की रानी
उस को नहीं नचाओ तुम
घर पर बैठे हाकिम बन कर
आफ़िस ना दौड़ाओ तुम
खाना बनाए बच्चे सुधारे
महरी ना घर लाओ तुम
महरी करे तुम्हारी सेवा
पत्नी सेवा औरों की
यह लाजिक है बिल्कुल उल्टी
हम को नहीं पढ़ाओ तुम

(शेष पृष्ठ १६ पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

सुदर्शन बोले, कुरआन की शिक्षा वेदांत की तरह ही है

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख के.एस. सुदर्शन ने कहा कि कुरान की शिक्षाएं वेदान्त जैसी ही है तथा भारत वास्तव में दारूल इस्लाम ही है। इस्लामिक मदरसे बेनकाब पुस्तक का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा कि सच्चा इस्लाम शांति और बहुधर्मी समाज में विश्वास रखता है इसलिए भारत दारूल हर्ब (गैर इस्लामी भूमि) बताना गलत है। भारत वास्तव में दारूल इस्लाम (शांति की भूमि) ही है क्योंकि इस्लाम के ७३ फिरके अपने मुताबिक उपासना और जीवनयापन करते हैं।

संघ प्रमुख ने मुसलमानों और उनकी संस्थाओं को आतंकवाद से जोड़ने की प्रवृत्ति से बचने की सलाह देते हुए कहा कि भारत के मुसलमानों का बड़ा वर्ग मुख्यधारा से जुड़ा है तथा वह हिन्दुओं के साथ मेलमिलाप से रहना चाहता है। उन्होंने कहा कि मुसलमानों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया था तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि मदरसों में ऐसी आधुनिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जिससे योग्य और सक्षम डाक्टर, इंजीनियर और विशेषज्ञ पैदा हों जो विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र निर्माण में योगदान करें।

एम्सटर्डम के नीचे बसेगा छह मंजिला शहर!

बचपन में पाताल लोक की कहानियां तो आपने बहुत सुनी होंगी। अब ऐसा सच भी होने जा रहा है। डच इंजीनियर नीदरलैण्ड्स के एम्सटर्डम शहर के नीचे शहर बसाने की तैयारी कर रहे हैं। जगह की कमी को पूरा करने के लिए इस योजना पर विचार किया जा रहा है।

द डेली टेलीग्राफ में छपी खबर के अनुसार इस अनोखे शहर को बसाने के प्रस्ताव को एम्सटर्डम नगर पालिका ने मंजूरी दे दी है, लेकिन इसका निर्माण कार्य२०१८ से शुरू होगा और इसे पूरा होने में २० वर्ष लग जाएंगे। १० लाख वर्ग फिट में फैले भूमिगत शहर को बनाने की लागत ७.४ अरब पौंड आएगी। इसमें छह मंजिली इमारतों का निर्माण कराया जाएगा और पार्किंग व शॉपिंग मॉल जैसी सुविधाएं होंगी।

ज्वार्टस एंड जांसमा आर्किटेक्ट फर्म के साझेदार मोश ज्वार्ट्स ने कहा, हम हमेशा एम्सटर्डम में जगह की कमी महसूस करते रहे हैं। इसलिए हमने नई निर्माण तकनीक से शहर के नीचे भवन बनाने का फैसला किया है। इससे यातायात व्यवस्था में बाधा भी नहीं पहुंचेगी।

एम्सटर्डम शहर दलदली जमीन पर बसा हुआ है और यह नहरों से घिरा हुआ है। दलदली जमीन की वजह से पुराने घरों की लकड़ियों के खम्भों से टिकाया गया है।

सऊदी अरब में हजयात्रियों की बीमा योजना

सऊदी अरब की पहली बीमा कम्पनी तआवीना ने इस्लामी राज्य में हज आदि के लिऐ आने वाले लाखों विदेशी हज यात्रियों को बीमा की सुविधा प्रदान करने के लिए एक बड़ी योजना शुरू की है।

मनासिक के नाम से बीमे की सुविधा प्रदान करने के लिए इस कम्पनी ने मनाया में बहरेन कोयत बीमा कम्पनी और संयुक्त अमीरात अलअीअहलिया के साथ अनुबन्ध (मुआहेदः) पर हस्ताक्षर किये हैं। इस से १५ लाख हज यात्रियों और ५० लाख से अधिक उमरा पर आने वालों को लाभ पहुंचेगा।

अरब न्यूज के अनुसार तआवीना के उप प्रबन्धक अध्यक्ष फोहद अलहसनी ने कहा कि सऊदी अधिकारियों के लिए लाखों हज यात्रियों को स्वास्थ सुविधायें पहुंचमा बड़े चिन्ता का विषय रहा है। स्वास्थ मंत्रालय के २००६ में जारी किये गये आंकड़ों के अनुसार मक्का और दूसरे पवित्र स्थानों पर इस अवध के बीच ११ हजार से अधिक हज यात्रियों के स्वास्थ की देखभाल करना बड़ी चिन्ता का विषय है जबकि स्वास्थ केन्द्रों ने ८१२००० लोगों का इलाज किया। अलहसनी ने कहा कि मनासिक प्रोग्राम विदेशी हज यात्रियों के लिए इस्लामी राज्य में ठहरने के दौरान स्वास्थ सुरक्षा का अमली हल पेश करता है।